Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 09 | 30 सितम्बर, 2019 | मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

गठबंधन राजनीति के प्रणनेता – ताऊ देवी लाल

जो बढ़ते हैं जमाने में, अपने मजबूत इरादों के बल। उन्हें मंजिल पाने में, किसी राय की जरूरत नहीं होती ।।

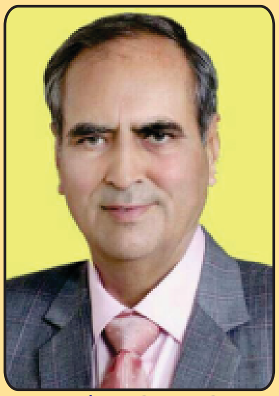

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

ताऊ का सफरनामा इस महान देश की पवित्र जमीं पर 25 सितम्बर 1914 को शुरू हुआ और 6 अप्रैल 2001 को धरती की आत्मा धरती में विलीन हो गई। अत: 25 सितम्बर को ताऊ की 106वीं जन्म शताब्दी पर राष्ट्र का समस्त ग्रामीणवर्ग-कामगार-काश्तकार और किसान उनको नमन कर रहा है।

एक रजवाड़ा परिवार में सुख-सुविधापूर्ण परिवार में जन्म हुआ। उन्होंने अपनी ही भूमि मुजारों में बांट दी। मखमली परिधान छोड़ खादी अपनाई और जीवन प्रयन्त उसी में रहे। सुख सुविधा त्याग किसान गरीब मजदूर के हकों के लिए संघर्षरत रहे। स्कूल गए- महात्मा गांधी के सत्याग्रह शुरू हो गए- उनके साथ हो लिए और जीवन प्रयंत संघर्षशील रहे। सरदार प्रताप सिंह कैरों मंत्रिमंडल में मुख्य संसदीय सचिव बने, लेकिन हरियाणा क्षेत्र से भेदभाव की नीति के विरूद्ध संघर्ष छेड़ा। मंत्रिमंडल ही नहीं कांग्रेस ही छोड़ दी और हरियाणा बनवाने में भूमिका निभाई। गद्दी मिली कोई लोभ नहीं, अपना प्रधानमंत्री का ताज वीपी सिंह के सिर पर रख दिया। वे एक अनूठी राजनीति करते थे 'एक वोट एक नोट' का नारा भी उनकी देन है। उनका कथन था- 'मैं चलता गया, रास्ते मिलते गए, राह के कांटे फूल बनकर खिलते गए। वे एक संयासी राजनेता थे। जो गरीब किसान मजदूर और कलाकार हेतू संघर्षरत रहे। पार्टी कोई भी हो, जिसमें वे रहे उनके विधायक के टिकट सदा दबे-कुचलों हेतू रहे। क्षमा उनके चरित्र का हिस्सा थी, कितनी बड़ी गलती करने उपरांत उनके पास फरियादी हाजिर हो क्षमा-याचना कर ली, मतलब आर्शीवाद मिल गया। उनका मानना था बड़प्पन पद से नहीं संस्कारों से मिलता है।

उनका कथन था कि नारी को इज्जत दो- पूजन स्वत: हो जाएगा। आज हमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा मिलता है। लेकिन चौ. देवी लाल ने कन्या को निशुल्क शिक्षा, घुमंतु परिवारों के बच्चों को शिक्षा की ओर लाने हेतू एक रूपया हाजरी फीस स्कूल जाने पर दिया- उनकी स्टेशनरी-वर्दी निशुल्क दी। गरीब कन्या की शादी में शगुन दिया, जबकि उसके जन्म पर जच्चा-बच्चा भत्ता भी लागू कर दिया गया था। उन्होंने ऐसे मुद्दों का जिक्र किया, जिसका कभी किसी ने सोचा ना था और इन छोटे लेकिन महत्वपूर्ण मुद्दों ने उन्हें जन प्रिय से जननायक बना दिया। वृद्धों को सम्मान पेंशन, देहात में हरीजन चौपाल, गांवों में रिंग बांध, फसल बुआई में देरी को लेकर सरकारी ट्रैक्टरों से जुताई करवाकर सरसों की बुआई। हर देहात में स्वच्छ पानी उपलब्धता हेतु हर एक मानव या पशु के लिए एक निर्धारित मात्रा में जल सुविधा की व्यवस्था। ''पानी का प्रबंध भ्रष्टाचार बंद'' का नारा दिया। ''प्रशासन आपके द्वार'' जिला स्तर के अधिकारियों को देहात में कैंप लगाकर समस्याओं को सुलटाने की पहल की। गन्ने की सर्वाधिक कीमत निर्धारित की, किसान के ऋण माफी की योजना देशभर में एक पथ प्रदर्शक बनी।

जनहित की कल्याण व कल्याणकारी शासनतंत्र की स्थापना के लिये वे विपक्षी एकता हेतु चल पड़े। हर राज्य में घूम-घूमकर सभी पार्टियों को एकजुट किया। सरकार की जनकल्याणकारी व किसान विरोधी नीतियों से समाज के हर वर्ग को अवगत करवाकर नई राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के लिये जनता के सहयोग से समस्त राष्ट्र में न्याययुद्ध के नाम से जन आन्दोलन किये। लेकिन आज दूर्भाग्य का विषय है कि समस्त राष्ट्र में सामाजिक भाईचारे, राष्ट्रीय एकता व राजनैतिक क्रांति के लिये जीवन प्रयन्त संघर्ष करने वाले चौ0 देवीलाल का परिवार आज अलग-अलग राजनैतिक राहों पर चलते हुये दोफाड़ हो चुका है। परिवार का एक धड़ा नया राजनैतिक दल बनाकर अपना राजनैतिक भविष्य सुनिश्चित कर रहा है जबकि उनके छोटे सुपुत्र व हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ0 ओम प्रकाश चौटाला वास्तविक/परम्परागत दल के सहारे चौ0 देवीलाल की कल्याणकारी नीतियों व राजनैतिक विचार धारा पर कायम रह कर उनकी राजनैतिक विरासत को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। यहां तक कि आगामी 25 सितम्बर को उनका जन्मदिन भी दोनों धड़ों द्वारा अलग-अलग स्थानों पर मनाया जा रहा है।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

चौ0 देवीलाल के समय में उनके राजनैतिक जीवन को खत्म करने के लिये 3 ऐतिहासिक घटनाएं हुई। पहली घटना जुलाई 1979 की है जब तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री निवास पर भेदभाव व दूर्भावना के तहत अविश्वास प्रस्ताव पास करके चौ0 देवीलाल को मुख्यमंत्री पद से हटा दिया। दूसरी घटना फरवरी1980 की है जब तत्कालीन मुख्यमंत्री चौ0 भजन लाल ने जनता दल के 35 विधायकों को कांग्रेस में शामिल कर चौ0 देवीलाल की सरकार को गिरा कर अपनी सरकार बनाई। इसी प्रकार तीसरे घटना क्रम में तत्कालीन राज्यपाल स्वर्गीय श्री जी0ड़ी0 तपासे द्वारा वर्ष 1982 के आम चुनाव में चौ0 देवीलाल को सरकार बनाने का न्यौता दिया गया लेकिन इससे पहले ही धोखे से दूर्भावना व भेदभावपूर्ण रवैया अपनाकर चौ0 भजनलाल को मुख्यमंत्री की शपथ दिला दी लेकिन इन सब घटनाओं से चौ0 देवीलाल विचलित नहीं हुये। वे एक अनथक धर्मनिरपेक्ष, जातिवाद एवं क्षेत्रवाद से परे समाजवादी एवं राजनैतिक गठबंधन की राजनीति के राष्ट्रव्यापी एकछत्र माहिर नेता थे। वे अपनी हर पराजय को विजय में बदलने के लिए स्वामी विवेकानंद की तरह दृढ़ निश्चय रखते थे। अतः उन्होने स्वर्गीय राष्ट्रीय नेता जयप्रकाश नारायण के जन्मदिन 11 अक्तुबर 1986 को कनार्टक की राजधानी बंगलुरू में समान विचारधारा वाले राजनैतिक नेताओं का सम्मेलन बुलाया जिसमें एक राजनैतिक दल, जनता दल की स्थापना की गई। स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार को छोड़कर आए स्वर्गीय वी0पी0 सिंह को जनता दल का प्रथम अध्यक्ष बनाया। इसी तरह हरियाणा में सुप्रसिद्ध हरिजन नेता स्वर्गीय चौधरी चांद राम को इस दल का अध्यक्ष बनाया और डा0 मंगल सैन के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर हरियाणा में गठबंधन किया और राजनैतिक चेतना, सामाजिक भाईचारे व भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतू न्याय युद्ध के नाम से जन आंदोलन शुरू किया तथा अपने साथ हुए राजनैतिक अन्याय का मुंहतोड़ जबाब देते हुए हरियााणा में वर्ष 1987 में स्वर्गीय बंसीलाल के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी की सरकार को ना केवल पराजित किया बल्कि 90 विधानसभा सीटों में से 85 सीटें जीतकर एक नया इतिहास रचा। उस समय हरियाणा में बीजेपी ने गठबंधन के साथ 17 सीटें जीतकर नया इतिहास कायम किया था। स्व0 ताऊ देवीलाल हरियाणा के मुख्यमंत्री बने और तत्पश्चात राष्ट्रव्यापी न्याययुद्ध के लिए निकल पड़े। उस समय गुप्तचर विभाग के प्रमुख होने के नाते लेखक से बतियाते थे कि श्री वी0पी0सिंह को देश का प्रधानमंत्री बनाना है। वे स्वतंत्र भारत के एकमात्र नेता थे जिन्होने अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए जातिवाद व क्षेत्रवाद से उपर उठकर 1989 में एक साथ आम लोकसभा चुनावों में 3 संसदीय क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और सीकर से पूर्व लोकसभा स्पीकर एवं कांग्रेस के धुरंधर नेता डा0 बलराम जाखड़ को हराकर व रोहतक संसदीय क्षेत्र से संत हरद्वारी लाल को हराकर दो संसदीय क्षेत्रों से जीत हासिल करके उन्होंने स्व0श्री वी0पी0सिंह को प्रधानमंत्री बनाया और स्वयं उपप्रधानमंत्री व केन्द्रीय कृषिमंत्री के पद पर आसीन हुये। चौ0 देवीलाल के इस ऐतिहासिक कदम से यह साबित होता है कि उनकी कथनी व करनी में कोई अंतर नहीं था और उन्होने अपनी राजनैतिक विशेषज्ञता का अद्भुत परिचय दिया।

यह अथक, बेलाग-बेदाग योद्धा कही भी कुछ भी खा लेता था, कहीं भी सो सकता था। यही उनकी लोकप्रियता थी। वे जनता के थे और जनता उनकी। मुख्यमंत्री रहते सरकारी आवास के बाहर मिलने आने वाले ग्रामीणों हेतू टैंट की व्यवस्था के साथ हुक्के की व्यवस्था की। यहां वे रोजना स्वयं कुछ समय आते और उन्हीं से बतलाते। दुख-सुख की बातें होती और बहुत सारी समस्याओं का समाधान तुरंत कर दिया जाता। एक बार सर्दी के मौसम में दो वृद्ध महिलाएं सोनीपत से उन्हें मिलने आ पहुंची। मुख्यमंत्री द्रवित हुए, उनके भोजन की व्यवस्था घर से की। दोनों को सर्दी से बचाव के हेतू कंबल तथा 100-100 रू. देकर अपनी व्यक्तिगत गाड़ी से बस अड्डे पहुंचाया और बस को उनके आगमन तक रोककर रखने की व्यवस्था की। ऐसे थे ताऊ देवी लाल। कर्मठ लेकिन कोमल हृदय बहुत जल्द द्रवित हो उठता था। हरियाणा में बाढ़ आई, सिर पर तसला उठा लिया, हर गांव के गिर्द रिंग बांध बनवा दिया। आज अगर हरियाणा का देहात बाढ़ की विभिषका से बचा है तो श्रेय चौधरी देवी लाल की दूर दृष्टि को जाता है। इन बांधों पर होने वाले खर्चे सरकारी खजाने पर बोझ ना पड़े, श्रमदान के साथ-साथ जगह-जगह ''स्टार नाईट'' आयोजित करवाई तथा इसकी आमदन से बांध का कार्य पूर्ण हुआ।

किसान को फसल की बुवाई और कटाई दोनों समय बिजली-पानी की जरूरत बढ़ती है, इसके मद्देनजर उन्होंने उद्योगों से वार्तालाप के माध्यम से समाधान निकाला ताकि किसी भी क्षेत्र को नुकसान ना हो, किसान के लिए 24 घंटे बिजली की व्यवस्था करवाई। किसान को उसकी फसल की उचित कीमत मिले, वे सदा सतर्क और संघर्षशील रहे। किसान-काश्तकार के कल्याण के लिये खाद, बीज, कीटनाशकों पर सब्सिड़ी दिलाना, किसान के खेत के साथ लगते वृक्षों की आधी कीमत दिलाने, खालों को पक्का करने व प्राकृतिक आपदा के कारण फसलों को हुये नुकसान का मुआवजा आदि दिलाने की विशेष व्यवस्था करवाई। वे किसान के मुख्य कृषि यंत्र, ट्रैक्टर को किसान का गडडा मानते थे इसलिये उन्होंने ट्रैक्टर पर लगाये जाने वाले टोकन टैक्स, पंजीकरण फीस आदि को बन्द करके ट्रैक्टर का चालान काटने से छुटकारा दिया था।

किसी के अस्तित्व को न मिटाओ। शांतिपूर्वक स्वयं जियो और उसी प्रकार दूसरों को जीने दो। – महावीर स्वामी

लेकिन आज मोटर व्हीकल (संशोधन) अधिनियम 2019 के तहत ट्रैक्टर के न केवल चालान काटे जा रहे है बल्कि इसे भारी वाहन और व्यवसायिक वाहन भी माना जा रहा है। हाल ही में गुरूग्राम में एक गरीब किसान के ट्रैक्टर-ट्राली का 59000 रुपये का चालान काटा गया है जोकि सरकार द्वारा सरासर किसान विरोधी नीतियों को दर्शाता है। एक बार किसान के आलू का भाव लागत से भी कम हो गया, भरपूर फसल लेकिन किसान घाटे में, उन्होंने केंद्र से मदद की गुहार नहीं लगाई बल्कि सीधा इरान से समझौता किया। प्रदेश के खेतों में इरान के लंबे-लंबे ट्रक पहुंच गए और मौके से आलू भी उठ गया, जिससे किसान-सरकार तथा खरीददार तीनों को लाभ हुआ।

आज किसानों के मसीहा, महान स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के जनक, जननायक चौधरी देवीलाल हमारे बीच नहीं हैं लेकिन अपने जन कल्याणकारी नीतियों एवं दूरदर्शी सोच की बदौलत वे आज भी जनता-जनार्दन के दिलों में रचे-बसे हुए हैं। यही कारण है कि आज भी चौ. देवीलाल का महज नाम लेने से ही हजारों की संख्या में बुजुर्ग एवं नौजवान उद्वेलित हो उठते हैं। उन्होंने आजीवन किसान, मजदूरों, गरीब एवं बेसहारा वर्ग के लोगों के लिए सफल लड़ाई लड़ी, जिस कारण लोग उन्हें भारतीय राजनीति के अपराजित नायक के रूप में देखते हैं। जन नायक ताऊ देवीलाल का समस्त जीवन ग्रामीण भारत में फैले व्यापक शोषण, असमानता, गरीबी व अंधेरे को समाप्त करने के लिए संघर्ष में ही व्यतीत हुआ क्योंकि वे हमेशा कहा करते थे ''मेरी असली ताकत भारत के ग्रामीण वर्ग में निहित है।'' वे एक कर्मयोगी तथा राजयोगी थे और हमेशा कहते थे कि ''मैंने कभी भी चालाकी की राजनीति नहीं की क्योंकि मैं एक ग्रामीण हूं और ऐसा करना एक ग्रामीण की मर्यादा के खिलाफ है।'' उन्हें हिंदी भाषा के साथ-साथ उर्दू भाषा से दिल से लगाव था इसलिए उर्दू के मशहूर शायर डा. सर मोहम्मद इकबाल के शेयर' 'खुदी को कर बुलंद इतना हर तदवीर से पहले, खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है' के अत्याधिक प्रशंसक रहे हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तर्ज पर उनकी भी यह सोच थी कि इस देश में असली साम्राज्य उस समय स्थापित होगा, जब देश की सत्ता की बागडोर एक कामगार व किसान के हाथ में होगी। उनका स्वप्न था कि देश के राष्ट्रपति की कुर्सी पर दलित व प्रधानमंत्री के पद पर किसान, कामगार को आसीन करके ही महात्मा गांधी का समृद्ध व स्वावलंबी भारत का सपना पूरा हो सकता है। गांधी जी के स्वप्न को पूरा करने के लिए उन्होंने स्व. चौधरी चरण सिंह, श्री एच डी देवगोड़ा व श्री चंद्रशेखर को प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान करवाया। वास्तव में जन नायक महान तपस्वी व त्याग की मूर्ति थे क्योंकि सन 1989 में जब प्रधानमंत्री पद के लिए उनके नाम का सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्व. श्री चंद्रशेखर द्वारा पेश किया गया तो उन्होंने खचाखच भरे केंद्रीय सदन में विनम्रता से इन्कार करते हुए प्रधानमंत्री पद के ताज को स्व. श्री वी पी सिंह के सिर पर रख दिया जोकि पूरे विश्व में बेमिसाल त्याग का आज तक का एक जीता जागता उदाहरण है। चौधरी साहब को कभी भी सत्ता का मोह नहीं रहा। वे सदैव कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।''

अपने शासनकाल में प्रदेश को स्वच्छ व पारदर्शी प्रशासन प्रदान करने के लिए गांवों में खुले दरबार (सरकार आपके द्वार) लगाकर जिला प्रशसन व पुलिस तंत्र को जनता जनार्धन के प्रति जवाबदेही बनाया। मुख्यमंत्री होते हुए भी घर-घर जाकर प्रत्येक व्यक्ति के दुख-सुख को जानने को उसकी समस्याओं को दूर करने की एक नई परंपरा स्थापित की। गांवों के विकास के लिए ग्रामीणों के नीजि प्रयासों द्वारा एकत्रित धनराशि पर सरकारी खजाने से दो या तीन गुणा अनुदान दिलाकर लगातार मैचिंग ग्रांट योजना शुरू करने व राज्य कोष से जारी धनराशि को सीधे पंचायत व ब्लाक स्तर पर खर्च करने के प्रावधान किए ताकि सरकारी कोष का सदुपयोग हो सके। पुलिस प्रशासन को चुस्त-दुरूस्त करने हेतू पलिस कर्मियों के लिए उन्हें समयबद्ध तरक्की देना, पूरे राज्य में खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पुलिस विभाग के खिलाड़ियों को भी खेल जगत में अव्वल प्रदर्शन करने पर विशेष तरक्की देना व ए एस आई के पद तक खिलाड़ी कोटे से 3 प्रतिशत विशेष भर्ती करने का प्रावधान आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की। अत: आज ताऊ देवीलाल जी को समस्त राष्ट्र में जन कल्याणकारी योजनाओं का सूत्रधार माना जाता है।

आज ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुसरण किए जाने की नितांत आवश्यकता है। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की अत्यंत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छंद प्रशासन के लिए मार्ग प्रस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सके तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

स्वावलंबी व स्वच्छंद ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। जगत ताऊ देवीलाल का जनता द्वारा चुने हुये प्रतिनिधियों को आयोग्य पाये जाने पर वापिस बुलाये जाने का जन अधिकार आज भी अधूरा है। वे सन 1977 से जीवन की अतिंम यात्रा तक यह आवाज सदैव उठाते रहे अत: लेखक को उम्मीद है कि स्पष्ट राजनीती व सुदृढ प्रजातंत्र की स्थापना के लिये ताऊ देवीलाल के इस नारे को अमल में लाया जाना बहुत आवश्यक है। अत: एक उदार हृदय एवं महान आत्मा ताऊ देवीलाल का राष्ट्र ऋणी है और लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक 1977 से 1979 व 1988 से 1989 तक ताऊ देवीलाल के सहायक तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचर विभाग) हरियाणा रह चुके हैं।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

Golden Period of Bollywood Music

- R. N. Malik

Bollywood gave us a lot to enrich our social and personal lives. Guru Dutt produced the most thematic movies like Pyasa and Kagaj ke phool that exposed the hypocrisy of our social millieue of that time . Unfortunately, he died at the very young age of 39 years. Had he lived for another 30 years, we could see many more superb films like Love and God- his next venture at the time of his death. K. Asif gave us the first magnum opus in Mugle Azam(1959) followed by Sangam, Guide and Mera Naam Joker seven years later. Sholey was the only blockbuster (in 1974) that broke all records of staying at one cinema hall for more than two years in Mumbai.

But the most enduring and everlasting benediction/benefaction/ beneficence of Bollywood was the soothing, sweet, vibrant, touching, humming, resonating, evergreen, rhythmic, throbbing, melodious, refreshing, captivating, soulful magical, even hypnotic and memorable music for two decades between 1950 and 1970. The span of five years between 1970-75 was the transition period. Thereafter the film music first turned into cacophony and then into noise. Sheilley, the famous English poet rightly said that a thing of beauty is a joy forever. This statement aptly fits on Indian music of that era as well. I doubt very much if any other country in the world had ever produced that kind of soul steering music. This captivating music of two decades consisted of the combined efforts of versatile music directors, lyricists and singers. So the sweet music was a combination of three beauties i.e. tunes, lyrics and melodious voice of singers.The right combination of the three components synchronized after 1949 when Lata Mangeshkar arrived on the scene and sang her debut song in Mahal (Aayega anewala) under Khemchand Prakash (1907-50). The melodious voice of Lata swept through the urban India and she became a celebrity overnight.

Soon after singers like Mukesh (had a touch of K.L. Sehgal), Asha, Usha, Suman Kalyanpur, Geeta Dutt, Kishore Kumar, Manna Dey, Talat and Mohinder Kapoor were scouted. Earlier versatile K. L. Sehgal (1904-47), Suraiya, Shamshad Begam and Mohamad Rafi occupied the stage. Likewise a new crop of lyricists arrived in Mumbai to try their luck-Shailender, Shakeel, Hasrat, Majrooh, Akhtar , Indivar, Rajinder Krishan, Kaifi Azmi, Prem Dhawan, Kavi Pradeep and Sahir Ludhianvi. Anand Bakshi came in sixties. The new entry of eleven Music directors consisted of Shanker-Jaikishan, C. Ramchander, Ravi, S. D. Burman, Roshan, Chitragupta, Madan Mohan, Hemant Kumar, O.P. Nayar, Kalyan Ji-Anand Ji, Laxmikant-Piareylal & Usha Khanna. Music directors like Khyam, Salil Choudhary, N Dutta, Iqbal Quereshi and Jaidev formed category B. They also gave superb music in some of the films (Shagoon, Madhumati, Razia, Dhool Ka Phool, Light House, Shola Aur Shabnam, Umar Quid, Mohabat isko kahte hain, Kinare-Kinare) but somehow could not occupy much space in the Industry. Gulam Mohmmad gave very soul steering music in Laila Majnu (1953-Asman wale teri dunia se dil ghabra gya) and Shama (1961) and even surpassed Naushad. Reason for his sudden disappearance not known. Previously (1938-50) the soulful music purely based on Shastriya sangeet was tuned by RC Boral, Anil Biswas (Tarana - 1951), Husanlal-Bhagatram, Gulam Haider, Khemchand Prakaash and Naushad.

Then came the team of Shanker and Jaikishan from Gujarat in Rajkapoor's Barsat (1950). This team mixed local tunes with Sashtriya sangeet and produced songs that became hit with a larger segment of society. But the man who took the music to villages was Hemant Kumar Mukherjee popularly called Hemant Da. He composed the music for Nagin (1954) and it was an instant hit. For the first time village urchins started humming the tunes of two popular songs of this film I. e. Man dole mera tan dole and 'Mera dil ye pukare aaja'. Hemant Kumar was the first to produce a suspense film (Bees Saal Baad in 1960) with very thrilling songs.

Simultaneously other music directors started composing equally beautiful and captivating tunes till 1970. C. Ramchandra gave memorable music for Anarkali, Amardeep and Azad. Nausad gave heart rending music for Baijubawra, Mother India and Mugle Azam. It was difficult to rank who was greater-C. Ramchander in Anarkali or Naushad in Mugle-Azam. The story was the same in both the movies-Anarkali. Likewise it was difficult to rank the Music Directors in Tower House (Ravi, 1962, Aye Mere Dile Nadan), Guest House (1959, Chitragupta), Light House (N.Datta-1958) and Opera House (Chitragupta-1961) . Roshan composed melodious songs for Malhar, Barsat ki Raat, Babar, Dooj Ka Chand and Aarti. Jaidev was superb in Hum Dono and Kinare-Kinare, Chitragupt for Bhabi and many more movies, Shankar-Jaikishan for Badal (1951), Badshah, Awara, Sri 420, Ujala, Asli-Nakli, Basant Bahar, Kanahiya, Dil ek mandir, Haryali aur Rasta etc. Tera Mera Pyaar Amar (Asli-Nakali) and Ja-Ja Mere Bachpan (Jungli) were among the most enchanting songs of mass appeal.

Kalyan ji-Anandji created a stir by giving music in Madari, Chhalia (Teri rahon mein khade) and Samarat Chandergupt. Initially the two brothers were assistant to Hemantda in Nagin. The been in the two songs was played by them. Laxmikant-Pyarelal were assistant to Kalyan ji-Anandji and became instant hit in providing music for Parasmani (1961) and Dosti (1964). They stayed for two decades and composed many popular songs (Lootera, Sant Gyaneshwar) but could not recreate the heart rending music of Parasmani and Dosti. S. D. Burman was becoming equally popular in parallel. He composed music mostly for Devanand films like Taxi Driver, Baji, Nau Do Gyarah etc and others like Kaise Kahoon and Devdas . His first peak came in Pyasa (1957) when Sahir Ludhianvi penned very revolutionary songs. Hemant Da was three in one-producer, music director and singer. He tuned very beautiful songs in Durgesh Nandani, Kohra, Farar, Sahib Bibi aur Gulam. but could not show his old touch in Anupma and Majhali Didi.

As, a consequence, we continued to listen beautiful songs one after the other for 20 long years. Every fortnight, one heard a new song of a new film

with very captivating tunes rendered either by Rafi or Lata or Asha. The sweet music was flowing like sea waves throughout the country. Ravi became famous for his music in film Vachan. His greatest moment came in Chaudhvi ka Chand in 1959.The title song won the filmfare award. He produced very refreshing tunes, where Raffi had to sing at a very high pitch like Sau Baar Janam Lenge (Do Ustaad) or Sub kuchh luta ke hosh mein aye (Ek Saal-1962), Sagai (Is traha toda mera dil), Jindgi kya hai and Jane bahare husn tera lajwab hai (Pyar kiya to darna kya).

Each music director reached the pinnacle of his career and then started fading gradually. Shanker-Jaikishan attained the dizzy heights in Sangam in 1964. All the eight songs of this film were a great hit. He got filmfare award in Suraj (1966, Baharo phool barsaao). But Arjoo (1965) was the last best bet of melodious songs composed by the duo. Their music in Mera Naam Joker could-not match that of Sangam. After the death of Jai Kishan Shankar provided melodious tunes in Sanyasi (1975-Chal sanyasi mandir mein).

After composing two very beautiful songs in Dil bhi tera ham bhi tere (Mujhko iss Raat ki Tanhai main) and Saheli (Jis Dil Main Bassa Tha Pyaar Tera), K-A provided last best music in Himalaya ki god mein. The team started fading gradually after giving reasonably good music in Upkar and Porab-Paschim. His last one very beautiful song was in Yadgar (jis path pe chala). His songs won the best ranking in Binaca Geetmala but never brought a filmfare Award. After composing wonderful music in Taj Mahal (1963), Bhigi Raat and Devar (1966), Roshan also started fading and found wanting in Daadi Maa and Anokhi Raat. Lately, Nausad's best music score was in Mere Mehboob (Yad mein teri Jag Jag kar) and Leader in 1964.He provided good music in few more movies of Dilip & Rajender Kumar like Palki, Aadmi, Sathee and Ganwar but lost the old touch. S. D. Burman was at his peak again in Guide (1966). He provided good music in few other films like Jewel Thief and Prem Pujari. But music in Aradhna (1969) again brought him at the top. Most tunes were composed by his son R. D. Burman. This music resurrected Kishore Kumar who never looked back thereafter. But this music could not surpass the composition in Guide. R. D. Burman took over completely from the father and a new R. D. era began thereafter.

Madan Mohan became the master of gazals (Sapne main Sajjan se do baatein - Gateway of India - 1957) or Unko to ye shikayat hai (Adalat). His best musical score was in Sanjog (Badli se nikla hai chand) and Dekh Kabira Roya. His last best performance was in Mera-Saya (1966) and then he faded gradually. Throughout O.P. Nayyar composed stimulating and lilting tunes. He had a tiff with Lata and this gave Asha Bhonsley a great opportunity to come back in a big way. His songs for C.I.D. (1956), Naya Daur (1957) and Fagun (1959) became very popular in villages. His last best score was in film Kismat (Duniya hai mere pichhe - 1968). He copied the tune of Tere pyar ka asra chahta hoon song (Dhool ka phool) and composed Bahut sukriya badi meharbani (Ek Musafir Ek Hasina) and informed N. Dutta to seek his consent. Usha Khanna was the only female Music Director in the film industry for five decades. Her style of composition was something between that of O.P. Nayar and R.D. Burman. Her best musical score was in Shabnam (1964-Ye Teri Sadgi) and Souten in 1983.

This is how ten music directors faded into oblivion one by one after achieving immortality in their careers. Only Ravi was the sole exception. He won filmfare award for the song of Khandan 1965 (Tumhi mere mandir). Next year again his music in Do Badan was bold and superb. He was again superb in Ankhen and Neel Kamal. He composed throbbing music for few more films like Gauri, Umeed and Amanat (Door rahkar na karo baat) till 1977. He resurfaced in 1982 when he provided best musical score for Nikah which was again an instant hit with flashes of old music of golden period.

The 5000 songs of golden period had achieved a magnetic pull not simply because of their tunes. The lyrics and voice of the singers were equally mesmerizing. The variations in the voice of Rafi, Asha and Lata were unbelievable. They could sing in shrill voice of children in many birthday songs. Asha worked wonders when she sang exactly like Meena Kumari in Pyar Ka Sagar (Raat-raat bhar jag jag kar intjar karte hain). Variations and nuances in Lata's voice were superb in Jahanara gazal (Wo chup rahein to dil ke daag jalte hain) and Siri-Farhad (Gujra hua jamana-S. Mohinder). Rafi showed similar variations in Guide (Din dhal jaye raat na jaye) and many more.

Listening to the best in the world is another aspect of ecstasy and delight. They were more than what was Bradman in cricket (he was out for no score 7 times), Pilley in soccer and Dhayanchand in hockey. Pondering over the nuances in voice and appropriateness of lyrics with humming tunes gives you transcendental joy and ecstasy. All the lyricists e.g. Shakeel Badayuni (brother-in-law of Naushad), Shalender, Majrooh Sultanpuri, Hasrat Jaipur, Rajinder Krishan and Sahir Ludhianvi were unrivalled in their shayiri. It was very difficult to rank who was better than the other. Shakeel sahib mostly paired with Naushad and Ravi. Shalender and Hasrat with S-J, Raja Mehndi Ali Khan and Kaifi Aazmi with Madan Mohan (Heer Ranjha) etc. The lyrics were as fitting as they could be in the given situation. For example, Shalender was superlative in Haryali Aur Rasta when he wrote - Lakhon tare asman mein per dhonde se magar ek bhi na mila, dekh ke duniya ki diwali dil mera chup-chap jala or raha gardishon mein hardam mere isk ka sitara by Shakeel in Do Badan or Tumhe yaad hoga hum tum mile the (Satta Bazar) etc. They hardly left any aspect of life that was not woven into lyrics. Likewise, they also captured the precise feelings and spirit in consonance with the situation. Listen to the remarkable song of Saheli-Itna to kehdo humse, tumse hee pyar hai.

Male singers at that time were Rafi sahib, Mukesh, Kishore Kumar, Manna Dey, Talat and Mahender Kapoor. Two third songs were sung by Rafi sahib, 20% by Mukesh and rest by others. It was Madan Mohan who brought out the best in Rafi in Haqiqat when he sang Kar chale Hum Fida Jano tan sathio ab tumare hawale watan sathio. It was equivalent of Lata's all-time great Ai mere watan ke logo ab ankh mein bharlo pani (specially composed by C. Ramchander after war with China in 1962) that brought tears to the eyes of Jawharlal Nehru. Kishore Kumar monoplised only after 1970 when RD era started. Kishore was superb but tunes were not refreshing. His best rendering before was in Sriman Funtoosh and Ganga ki Lehrein. Manna Dey was best in Kabuliwala when he sang the famous song composed by Salil Chaudhary, "Ai mere pyare watan, ai mere bichhre chaman tujh pe meri jan kurban". It looked as if Hemantda was the inger of this song. Mahender Kapoor and N Datta were best in Dhool ka phool when he sang with Lata the famous duet, "Tere pyar ka asara chahta hoon". Talat and Lata's duet was best in Ek Saal (sab kuch luta ke hosh main aaye to kya mila - music composed by Ravi). S.D. Burman and Iqbal Quereshi brought out the best in Mukesh in Bandani (O Jane wale ho sake to laut ke aana), Bambai ka baboo (Chal ree sajni ab kya soche) and Umar Quaid (Mujhe raat din ye khyal hai).

The queen among female singers was Lata. She sang 70% songs. Asha sang 20% till RD came on the scene. Suman Kalyanpur, Usha Mangeshkar, Geeta Dutt and Sudha Malhotra filled rest of the gap. The quality of their singing varied very little and all of them were real nightingales. Lata came out best in Mugle Azam when she sang Pyar kiya to darna kya along with initial couplet Insaan kisi se duniya mein ek bar mohabbat karta hai or in Kali topi lal rumal when she sang Na to dard gaya na dawa hi mili, dhhond ke dekha jamana with the couplet composed by Chitragupta. Asha did wonder when she sang in Teesri Manjil under RD"O hasina julfon wali jane jahan". Only she could stretch her vocal chords to that extent like Rafi did the same in Haqiqat.

This is how nearly 5000 songs were penned, composed and sung between 1950 and 1970. At least 500 songs were the most heart rending, refreshing and everlasting. These were absolute gems. Ravi was known for composing best songs for tragedy situations (Sagai- is tarah toda mere dil and Bharosa-who dil kahan se laoon). Naushad was famous for composing tunes full of intensity and depth and based on Sashtriya sangeet (Shabnam, Amar, Son of India). Others gave comparatively soft music. Ravi also composed best songs of prayer scenes before Lord Krishan in Ankhein, Phool aur Pathar, Gharana, Ghoongat and Kajal S.J. composed Manmohan Krishan Murari (Lata-Sanjh aur Savera). He also gave two beautiful songs of Raksha Bandhan

in Chhoti Behan and Resam ki Dori. Most popular prayer song was Ai malik tere bande ham in Do ankhen barah hath (music composed by Vasant Desai- his best musical score was in Goonj uthi shahnai Toofan aur Diya) and followed by Tumhi ho mata, pita tumhi ho in Main Chup Rahungi - music composed by Chitragupta. Roshan was famous for composing qualis. Ravi always asked the lyricists to write the mukhra and then he composed the tunes. Others first composed the tune and lyricists wrote the lyrics thereafter. The main fault of all the music directors was that they allowed Lata, Rafi and Kishore to take the lions'share.

The main cause of sudden deterioration of rich music was too many pictures at the hands of music directors in sixties. Thus, quantity destroyed quality. Also, Shanker-Jaikishan introduced the trend of using large orchestra and initiated trendy music. Others also gradually followed suit. Also, some producers started shooting films in foreign locales and pressurized the music directors to give a western flavor to the songs. Then R. D. Burman did the rest and left behind everybody in the race. He had the knack of copying Western tunes and modifying these into Indian setting. The mixture so produced became a craze for the young generation. Ravi and Naushad were still the notable exceptions.

This is how the story of two decades of golden period of film music ended. The next 50 years of film music (particularly after 1990) are very painful. What we hear today is not music but something else that defies all descriptions. Fortunately for us, All India Radio still broadcasts old melodious songs under it's different programs. Old songs are also stored in easily available cassettes and U-tube. These songs are sung because listeners of our age groups are still there. What will be the fate of these songs after we disappear in next two decades. The next generation is not prepared even to listen one line of these oldies just as we are allergic to new cacophony. Reason for this apathy is incomprehensible. One student told me "Our parents never bothered to tell us the richness of the old music of yesteryears, So we are the product of modern music of jazzy trend only, "He is right to a great extent."

Now will the government or parents make some special efforts to shift the interest of present generation towards the old era music. Or will a new music director come and make some efforts to dig out the treasure of old music and create a new wave reminiscent of the golden past. Likewise, will India have another Rafi sahib (a perfect gentleman with zero arrogance) or another Lata or Asha or another Ravi or another Shailender or Sahir or Shakeel? Such persons are born once in centuries. Still every possibility depends on the future. But this diaspora of music directors, lyricists, singers of two decades and a storehouse of 5000 songs will remain a great heritage for coming generations of the future.

आओ याद करें शहीद ए आजम वीर भगतसिंह की कुर्बानी को

27 सितंबर को जन्मदिवस पर विशेष

– धर्मेन्द्र कंवारी

भारतीय आजादी के संग्राम में तीन लाख से भी ज्यादा वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी लेकिन एक भगतसिंह ऐसे वीर उनमें से जो अपनी शहादत से न केवल अपना नाम अमर कर गए बल्कि शहीद शिरोमणी भी कहलाए। भगत सिंह के नाम के आगे शहीदे आजम पुकारते हुए आज भी हर भारतीय का सीना गर्व से चौडा हो जाता है। 27 सितंबर 1907 को जन्म लेने वाले वीर भगतसिंह का यह नाम किसने और क्यों रखा इसके पीछे एक बडी दिलचस्प कहानी है। शहीद–ए–आजम भगतसिंह की बहादुरी और क्रांति के किस्से–कहानियों को तो हर कोई जानता है, लेकिन उनका नाम भगतसिंह क्यों पड़ा, इस बारे में शायद बहुत कम लोग जानकारी रखते हैं।

भारत मां के इस महान सपूत का नाम उनकी दादी के मुँह से निकले लफ्जों के आधार पर रखा गया था। जिस दिन भगतसिंह का जन्म हुआ, उसी दिन उनके पिता सरदार किशनसिंह और चाचा अजीतसिंह की जेल से रिहाई हुई थी। इस पर उनकी दादी जय कौर के मुँह से निकला 'ए मुंडा ते बड़ा भागाँवाला ए' (यह लड़का तो बड़ा सौभाग्यशाली है)। शहीद–ए–आजम के पौत्र (भतीजे बाबरसिंह संधु के पुत्र) यादविंदरसिंह संधु भी कई बार सार्वजनिक सभाओं में इस बात का जिक्र कर चुके हैं कि भगतसिंह की दादी के मुँह से निकले इन शब्दों के आधार पर घरवालों ने फैसला किया कि भागाँवाला (भाग्यशाली) होने की वजह से लड़के का नाम इन्हीं शब्दों से मिलता–जुलता होना चाहिए, लिहाजा उनका नाम भगतसिंह रख दिया गया। उस समय किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि दादी का ये लाडला भारतीय इतिहास में शहीद शिरोमणी कहलाएगा और आने वाली पीढियां उनके त्याग, विचारों और बलिदान से प्रेरणा लेती रहेंगी।

शहीद–ए–आजम का नाम भगतसिंह रखे जाने के साथ ही नामकरण संस्कार के समय किए गए यज्ञ में उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह ने यह संकल्प भी लिया कि वे अपने इस पोते को देश के लिए समर्पित कर देंगे। भगतसिंह का परिवार आर्य समाजी था, इसलिए नामकरण के समय यज्ञ किया गया। यादविंदर संधु के अनुसार उन्होंने घर के बड़े–बुजुर्गों से सुना है कि भगतसिंह बचपन से ही देशभक्ति और आजादी की बातें किया करते थे। यह गुण उन्हें विरासत में मिला था, क्योंकि उनके घर के सभी सदस्य उन दिनों आजादी की लड़ाई में शामिल थे। एक बार सरदार अजीतसिंह ने भगतसिंह से कहा कि अब सब लोग तुम्हें मेरे भतीजे के रूप में जाना करेंगे। इस पर शहीद–ए–आजम ने कहा कि चाचाजी मैं कुछ ऐसा करूंगा कि सब लोग आपको भगतसिंह के चाचा के रूप में जाना करेंगे। उनके इतना कहते ही चाचा ने भगतसिंह का माथा चूम लिया और कहा कहा इसे बडे गर्व की बात एक चाचा के लिए क्या होगी।

शहीद–ए–आजम का जन्म 1907 में 27 और 28 सितम्बर की रात पंजाब के लायलपुर जिले (वर्तमान में पाकिस्तान का फैसलाबाद) के बांगा गाँव में हुआ था, इसलिए इन दोनों ही तारीखों में उनका जन्मदिन मनाया जाता है।

लाहौर सेंट्रल कॉलेज से शिक्षा ग्रहण करते समय वे आजादी की लड़ाई में सक्रिय रूप से शामिल हो गए और अंग्रेजों के खिलाफ कई क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने के मामले में उन्हें कालापानी की सजा हुई, इसलिए उन्हें अंडमान–निकोबार की सेल्युलर जेल में भेज दिया गया, लेकिन इसी दौरान पुलिस ने सांडर्स हत्याकांड के मामले में एकतरफा कार्रवाई करते हुए फाँसी की सजा सुनाई गई।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

भारत के इस महान क्रांतिकारी को फाँसी 24 मार्च 1931 की सुबह दी जानी थी, लेकिन अंग्रेजों ने बड़े विद्रोह की आशंका से राजगुरु, सुखदेव और भगतसिंह को जेल के भीतर चुपचाप निर्धारित तिथि से एक दिन पहले 23 मार्च 1931 की शाम को ही फाँसी दे दी और उनके पार्थिव शरीर वहाँ से हटा दिए गए। लाहौर सेंट्रल जेल में भगतसिंह ने 404 पेज की डायरी लिखी, जिसकी मूल प्रति इस समय उनके पौत्र यादविंदर के पास रखी है। भगतसिंह कुल 716 दिन जेल में रहे और हर दिन को अपने आप एक इतिहास बना दिया। यादविंदर ने बताया कि उनके दादा भगतसिंह की गर्दन पर एक अलग तरह का निशान था, जिसे देखकर एक ज्योतिषी ने कहा था कि बड़ा होकर यह लड़का देश के लिए या तो फाँसी पर चढ़ेगा या फिर नौलखा हार पहनेगा यानी कि अत्यंत धनाढ्य व्यक्ति होगा। ज्योतिषी की पहली बात सही साबित हुई और भगतसिंह को 23 बरस की छोटी–सी उम्र में फाँसी के फंदे पर झूल जाना पड़ा।

भगत सिंह को शहीद ए आजम की उपाधि के पीछे भी कई तरह की बातें हैं। बहुत कम ही लोगों को मालूम है कि भगत सिंह को सबसे पहले शहीद–ए–आजम का खिताब किसने दिया था या किसने उन्हें शहीद–ए–आजम कहना शुरू किया था? दरअसल भगत सिंह को फांसी की सज़ा मिलने के बाद कानपुर से निकलने वाले 'प्रताप' और इलाहाबाद से छपने वाले 'भविष्य' जैसे अखबारों ने उनके नाम से पहले शहीद–ए–आजम लिखना शुरू कर दिया था। भगत सिंह खुद कानपुर के अखबार प्रताप में काम करते थे। कानपुर से भगत सिंह का गहरा रिश्ता रहा। भगत सिंह ने तो 'प्रताप' अखबार में बलवन्त सिंह के छद्म नाम से लगभग ढाई वर्ष तक कार्य किया। चन्द्रशेखर आजाद से भगत सिंह की मुलाकात विद्यार्थी जी ने ही कानपुर में करायी थी। कानपुर में वे थे बलवंत सिंह कानपुर के इतिहासकार अजीत तिवारी कहते हैं कि भगत सिंह ने कानुपर के एक स्कूल में पढ़ाया भी। 'प्रताप' में भगत सिंह ने सदैव निर्भीक एवं निष्पक्ष पत्रकारिता की। 'प्रताप' प्रेस के निकट तहखाने में ही एक पुस्तकालय भी बनाया गया, जिसमें सभी जब्तशुदाक्रान्तिकारी साहित्य एवं पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध थी। तिवारी बताते हैं कि भगत सिंह यहां पर बैठक घंटों ही पढ़ते थे। वस्तुतः प्रताप प्रेस की बनावट ही कुछ ऐसी थी कि जिसमें छिपकर रहा जा सकता था तथा फिर सघन बस्ती में तलाशी होने पर एक मकान से दूसरे मकान की छत पर आसानी से जाया जा सकता था।

भगत सिंह बुद्धिजीवी थे, लेकिन शहीद–ए–आजम का यह पक्ष अब तक अप्रचारित है। उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व के इस पहलू की तरफ वे लोग भी ध्यान नहीं देते जो स्वयं को भगत सिंह की परंपरा के ध्वजवाहक कहते हैं। भगत सिंह जब 17 वर्ष के थे, तो 'पंजाब में भाषा और लिपि की समस्या' विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में उन्होंने हिस्सा लिया था। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'मतवाला' में उन्होंने एक लेख लिखा था और उसी लेख को इस प्रतियोगिता में भेज दिया। भगत सिंह को इस लेख के लिए 50 रुपये का प्रथम पुरस्कार मिला था। भगत सिंह पत्रकार बनना चाहते थे। भगत सिंह एक ऐसे परिवार में पैदा हुए थे जो राष्ट्रवादी और देशभक्त परिवार था। भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह विचारक, लेखक और देशभक्त नागरिक थे। उनके पिता खुद एक बड़े देशभक्त थे। उनका भगत सिंह के जीवन पर गहरा असर पड़ा। लाला छबीलदास जैसे पुस्तकालय के प्रभारी से मिली किताबें भगत सिंह ने दीमक की तरह चाट डाली थी। पुस्तकालय प्रभारी ने कहा था कि भगत सिंह किताबों को पढ़ता नहीं था, वह तो निगलता था। भगत सिंह को फांसी होने वाली थी, फिर भी वह अपने अंतिम समय तक रोज किताबें पढ़ रहे थे। भगत सिंह मृत्युंजय थे। भगत सिंह को हिंदी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भाषा भी आती थी, जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। जेल में भगत सिंह करीब दो साल रहे। इस दौरान वह लेख लिखकर अपने क्रांतिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। जेल प्रवास के दौरान उनके लिखे लेख व सगे–संबंधियों को लिखे पत्र वस्तुतः उनके विचारों के दर्पण हैं। भगत सिंह मानते थे कि केवल अंग्रेजों के चले जाने से देश की आजादी का सपना पूरा नहीं हो सकता। केवल गोरे साहबों के स्थान पर भूरे साहबों का शासन होने से देश की बहुसंख्यक गरीब जनता का भला नहीं होने वाला है। इसलिए भगत सिंह ने समाजवादी विचारों का प्रचार करने और देश में समाजवादी शासन की स्थापना का सपना देखा। वह शहीद–ए–आजम कहलाए और आज भी लाखों युवाओं के दिल में बसते हैं।

महत्वपूर्ण सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के नेतृत्व में समाज कल्याण हेतू एवं विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन के लिये कार्यरत संस्थान – जाट भवन सैक्टर–27 ए, चण्डीगढ़ व सरछोटू राम जाट भवन सैक्टर–6, पंचकुला के इलावा गांव कोटली बाजलान–नोमई, कटरा–जम्मु में चौ० छोटूराम यात्री निवास का निर्माण कार्य शीघ्र प्रांरम्भ किया जा रहा है जिसमें शानदार हालों के साथ–साथ ठहरने के लिये वातानुकूलित कमरो की व्यवस्था होगी।

अहंकारी का विनाश जरूर होता है। – तुलसीदास

आर्थिक मंदी में उभरती चिंताएं समस्याएं और कारण

– अमित सिंह

एक समय जब भारत के सुपर पावर बनने की भविष्यवाणी हो रही थी । 2002 में न्यूयार्क टाइम्स आईएमएफ, लंदन टाइम्स का स्वतंत्र थिंकटैंक लेगाटम इस्टीट्यूट 2009 में 2030 तक भारत के सुपर पावर बनने की बात कर रहे थे। बहुत से थिंकटैंक ,पत्रिकाएं, संस्थाएं अभी तक दावा करती हैं भारत 2030 से 2050 के बीच सुपर पावर बनेगा। हाल ही में पूर्व वित्तमंत्री अरुण जेटली भी भारत को 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनने की भविष्यवाणी कर चुके हैं। आर्थिक आधार पर या जीडीपी बढाने से कोई देश सुपरपावर नहीं हो सकता। सुपर पावर बनने के लिए कोई भी देश खुद में बड़ी शक्ति बने।

अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों में बड़ी शक्ति उस सम्प्रभु देश को कहते हैं जिसमें वैश्विक रूप से प्रभाव डालने की क्षमता होती है। चूंकि हाल ही में अमेरिका प्रेजिडेंट ये स्वीकार कर चुके हैं कि भारत वैश्विक स्तर पर अपना प्रभाव छोड़ रहा है। वहीं जापान में जी बीस सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व के सामने आज के समय मे दुनिया के किसी भी देश को सुरपावर मानने से इनकार कर दिया है। उन्होंने कहा आज के समय में कोई देश सुपरपावर नहीं है पर पिछले कुछ दिनों से भारत की लगातार गिरती आर्थिक स्थिति भारत के वैश्विक स्तर पर उभरते रोल को कमजोर करेगी।किसी भी देश को महाशक्ति बनने के लिए उसकी उच्च अर्थव्यवस्था, उच्चतम सामाजिक स्तर, मानव गुणवत्ता, सशक्त आर्मी और मानव संसाधन की जरूरत आवश्यक होती है। उसके अंर्तराष्ट्रीय सम्बन्ध का स्तर एवं सहयोग मायने रखते हैं। पिछले दशक से भारत को भारत के 2030 तक सुपरपावर बनने के जो दावे हो रहे थे उसका सबसे बड़ा कारण था भारत में कामकाजी जनसंख्या।

संयुक्तराष्ट्र की वैश्विक आबादी रिपोर्ट के अनुसार भारत में कामकाजी जनसंख्या (15 से 59 वर्ष) उम्र तक 64 प्रतिशत है, और इसमें भी 2020–30 के बीच ज्यादातर लोग 20 से 35 साल के होंगे। हालांकि इस समय दुनियां के 55 देशों में जनसंख्या लगातार घटेगी।तो जाहिर सी बात है दुनिया को कामकाजी लोगों की जरूरत होगी। भारतीय संसद में पेश आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि जनसांख्यकीय लाभांश भारत के समक्ष बड़े अवसर होंगे। माना गया है 2020 तक भारतीयों की औसत आयु 29 साल होगी और लगभग एक दशक तक इसी के आसपास रहेगी । जबकि चीन की 37 पश्चिमी योरोप की 45 एवं जापान की 47 साल होगी। जाहिर सी बात है ये भारत के लिए बड़ा अवसर होगा।

लेकिन ये तभी सफल होगा जब भारत अपनी कामकाजी जनसंख्या का मानव संसाधन के रूप में बेहतर इस्तेमाल कर पायेगा।

वर्तमान सरकार के शुरुआत में मेक इन इंडिया, कौशल विकास, स्टार्टअप जैसी योजनाओं से लग रहा था कि भारत काफी हद तक सफल हो पायेगा। पर वर्तमान में गिरती अर्थव्यवस्था, उद्योगों से छूटते रोजगार, बढ़ती बेरोजगारी के कारण यही कामकाजी जनसंख्या बोझ बनती जा रही है। इसका कारण हिंसा, सामाजिक स्तर का कमजोर होना, अधिक से अधिक व्यवस्था का केंद्रीकरण, छोटे–छोटे रोजगारों का खत्म करना, स्थानीय एवं परंपरागत उद्योगों का समाप्त होना और सामाजिक उथल–पुथल भी है। जाहिर सी बात है जनसंख्या का मानव संसाधन के रूप में उपयोग किसी भी देश को महाशक्ति बना सकता है तो उसी जनसंख्या को खाली बैठाना एवं दुरुपयोग किसी भी देश को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर सकता है। वर्तमान में बढ़ती आर्थिक मंदी चिंता का विषय है।

आओ हिंदी बोलने पर गर्व करें

14 सितंबर हिंदी दिवस पर विशेष

– खुशी दीपा

भाषा हमारी संस्कृति की पहचान और भावनात्मक एकता का प्रतीक है। राष्ट्रीय एकता पारस्परिक सद्भाव और आपसी संबंधों को मजबूत करने में भाषा की अहम भूमिका होती है। हिंदी सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है जो अधिकांश लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है ,हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन को देश के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए हिंदी भाषा को ही माध्यम बनाया गया था, क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि राष्ट्रीय एकता के लिए तथा देशभक्ति की भावना को सभी तक पहुंचाने के लिए हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी , जो भारत के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में प्रयोग में लाई जाती थी हिंदी के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था अतः अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग करना हम सभी भारत वासियों की सवेधानिक जिम्मेवारी है हालांकि हिंदी भाषा को जो स्थान मिलना चाहिए,

उस लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। विश्व में जो देश विकसित हुए हैं, उन्होंने सदैव अपनी राजभाषा को साथ लेकर

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

विकास की ओर कदम बढ़ाया है उसी के मध्य नजर हमें भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए और यह तभी संभव हो सकेगा जब हम अपनी राजभाषा का सम्मान करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों को निष्ठा पूर्वक अनुपालन करें तथा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें। राजभाषा किसी भी देश का गौरव है किसी भी देश का पूर्ण विकास उसकी अपनी भाषा से ही होता है राजभाषा उस भाषा को कहते हैं जिसमें समूचा राष्ट्र अपने भावों को प्रकट कर सके। जिस प्रकार एक मां ही अपने परिवार को एकता में बांधे रख सकती है, सूत्र की भांति अपने में पिरो सकती है उसी प्रकार हमारी भाषा है जो राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरो सकती है।

हिंदी भाषा 1 दिन का मोहताज नहीं है कि हम एक दिन ही हिंदी दिवस के रूप में बिना मनाए पूरे साल हमें हिंदी का प्रयोग करना चाहिए और हिंदी बोलने पर गर्व करना चाहिए।

हमारे पूर्वज किसानों का दूध विज्ञान और हारे की उपयोगिता

– मनीराम सहारण

किसानों के बेटों ने हमेशा गाँव में 'हारा' देखा है जिसमें दूध हमेशा 50 डिग्री सेल्सियस के आसपास पकता रहता है। यह सुविधा मेल्लुख सभ्यता (जिसे आपको हड़प्पा के नाम से बताया जाता है) के समय भी थी।किसी को कभी चिंता ही नहीं हुई कि दूध उफन जायेगा, मलाई जम जायेगी, दूध फट जायेगा या कुत्ते–बिल्ली उसमें मुंह मार देंगे। हमारे पुरखों ने ऐसी व्यवस्था क्यों बनाई? क्योंकि वे मेल्लुख थे यानि कि श्रेष्ट जन थे। चलो इसके वैज्ञानिक पक्ष की बात करते हैं।

उससे पहले दूध को समझ लेंस दूध में दो तरह के प्रोटीन होता है – casein एवं whey प्रोटीन। casein प्रोटीन पर तापमान का कोई प्रभाव नहीं होता। दूध के कैल्शियम को इस प्रोटीन का फोस्फोरस घोल कर शरीर को ज्यादा फायदा पहुंचता है। यह शरीर में ज्यादा देर तक रहता है इसलिए कहा जाता है कि दूध रात को सोते समय पीयें। जबकि whey प्रोटीन को यदि 65 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान पर 10 मिनट तक रखने पर ही यह अपने गुण को बदल देता है जिसको डैंचर होना कहते हैं। इसी के कारण दही गाढ़ा नहीं होता एवं दूध पीने वाले को मलाई से उबकाई आना एक आम समस्या है। पहले हमारा दही गाढ़ा क्यों होता था वो अब आपको समझ में आ रहा होगा। आपको यह भी समझ में आ रहा होगा कि क्यों अब नई पीढी को दूध पीना अच्छा नहीं लगता या दूध एवं दूध से बने उत्पादों से एलर्जी की बीमारी बढ़ रही है। मैंने कुल्फी के व्यवसाय करने वाले एक व्यापारी से भी इस बात की पुष्टि की है। उसका कहना था कि हम साधारण प्रक्रिया में 100 प्रतिशत दूध को 50 प्रतिशत तक रह जाने पर गाढे दूध से कुल्फी बनाते हैं और इसके लिए दूध को 100 डिग्री सेल्सियस तक घंटे–दो घंटे तक उबालते हैं। इसके बनिस्पत दूध को आठ से दस घंटे तक पका कर 75 प्रतिशत गाढ़ा किया हुआ दूध ज्यादा गाढ़ी कुल्फी बनाएगा और यह कुल्फी बहुत ज्यादा स्वादिष्ट बनेगी। वो अब इसलिए ऐसा नहीं करते क्योंकि व्यापार बड़ा हो गया है और व्यापार में समय की बचत ही धन है (वो चाहे स्वास्थ्य की कीमत पर हो)।

अब मूल बात कि दूध को 50 डिग्री सेल्सियस तक पकाया ही क्यों जा रहा था। ऊपर लिखे दूध के गुणों को तो बचाया तो जा ही रहा था लेकिन साथ में यह ही एकमात्र एनर्जी एफिसिएंट व्यवस्था थी। जब आसपास का वातावरण 45 डिग्री सेल्सियस के आसपास हो तो समझदारी इसमें ही है कि केवल 5 डिग्री सेल्सियस का तापमान और प्रदान कर उसको संरक्षित किया जाय। यदि हम इसको ठंडा कर संरक्षित करेंगे तो हमको 30 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान नीचे ले जा कर संरक्षित रखना पड़ेगा जिसके लिए अत्यधिक उर्जा व्यय होती है। यह ध्यान रहे कि दूध का तापमान 15 डिग्री सेल्सियस के आसपास होने पर उसमें दूध फट जाय ऐसे बैक्टीरिया पैदा हो जायेंगे। इसलिए फ्रिज में से दूध बाहर निकाल कर रखने के कुछ देर बाद में दूध फट जाता है।

यूरोप में सामान्य तापमान शून्य सेंटीग्रेड के नीचे रहता है और केवल कुछ समय के लिए ही 15 डिग्री सेल्सियस के आस पास आता है। इसलिये उस समय के तापमान पर उनका दूध फटता था। उस कारण उन्होंने दूध से पनीर बनाना सीखा और इनको बनाने के लिए भूमिगत आवास बनाए जिनमें सालों तक तापमान 20 डिग्री सेल्सियस तक रखा जाता है और पनीर एवं वाइन को सालों तक सड़ाया जाता है। उन लोगों ने घर को गर्म करने के चूल्हे तो बनाए लेकिन दूध को संरक्षित करने के लिए 'हारा' बनाने का ख़याल कभी नहीं आया। दूध को उबाल कर पीने की मजबूरी के कारण उनकी एक बड़ी जनसँख्या अलग अलग बीमारी के कारण दूध एवं उसके उत्पाद का सेवन नहीं कर सकती है।

जो वातावरण में फर्क ऊपर बताया गया है और जो हमारे पुरखो की समझदारी बताई गई है उस कारण से हमारी सभ्यताओं की खुदाई में 'हारा' अवश्य मिलता है और यूरोप में चीज/पनीर के अवशेष। ऐसे ही समझदारी का एक और आविष्कार है, 'धान का कोठा', उसमें रखा अनाज 100 सालों तक ताजा रह सकता है वो भी बिना कीटनाशकों के। समझदारी का एक और आविष्कार है, अनाज पीसने की 'घट्टी' (रोटी खाने वाला बिजली की चक्की एवं हाथ की घट्टी की रोटी

का फर्क तुरंत बता देगा)। इसकी नक़ल पर ही बने हैं कोल्ड प्रेस जूसर। इन पर बात फिर कभी। यही सब कारण है कि मुझे दूध के चिल्लर प्लांट की सभ्यता, आटे की चक्की देने वाली सभ्यता पर तरस आता है और गर्व रहता है उन जाटों, अहीरों, गुजरों एवं मीणाओं पर जिन्होंने उपरोक्त के साथ मानव सभ्यता को 'मांडणे' दिए। उसका भी बड़ा महत्व है। हमारे यहाँ होना यह चाहिए कि दूध की डेरी बैलगाड़ियों पर 50 डिग्री सेल्सियस तापमान रखने वाले पात्रों में इसी तापमान पर पकाए हुए गर्म दूध का ही वितरण घर–घर करे। जितना दूध देर से बिकेगा उसका मूल्य उतना ही बढ़ता चला जाएगा। इससे बैल हमारी व्यवस्था के उत्पादक हो जायेंगे और हमें 'गौ राक्षसों' एवं जमीन हड़पने के यंत्र 'गौशाला' की जरुरत ही नहीं पड़ेगी।

मां के मुस्कराने से खुश होता देश

– सूजनपाल सिंह

अगस्त 2012 में डॉ. कलाम और मैं एक स्कूल के दौरे पर महाराष्ट्र के हरली गाँव पहुंचे। उस दिन काफी गर्मी व उमस थी। वहां मौजूद भीड़ बेचैन हो रही थी। जब डॉ. कलाम मंच पर पहुचे, तो भीड़ शांत हो गई। उन्होंने मौसम की हालत देखते हुए अपना भाषण संक्षिष्त रखने का निर्णय लिया अचानक मैंने भीड़ के बीच हलचल देखी। कुछ पुलिस वाले एक दुबली–पतली महिला को अंदर घुसने से रोक रहे थे। वह लगातार कहती जा रही थी, मुझे डॉ. कलाम से मिलना है। उस महिला के साथ एक लड़का भी था, जिसकी उम्र 16 साल रही होगी। उसके पैर पोलियो के कारण प्रभावित थे। इसलिए उसकी मां उसे नवजात शिशु की भांति अपनी गोद में लेकर आई थी। जब मैंने उन्हें मंच के बगल में आने का इशारा किया, तब उसने कहा, मेरा बेटा महामहिम से मिलना चाहता है। मैंने कुछ देर इंतजार करने को कहा, जब तक कि डॉ. कलाम भाषण खत्म नहीं कर लेते। जब भाषण खत्म हुआ, तब मैंने उन्हें उस महिला के बारे में बताया। उन्होंने तुरंत दोनों को मंच पर बुला लिया। उस बच्चे ने अपनी बात शुरु की और अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला, सर, मेरा नाम शैलेश है। मैं यहां आपको अपने सपने के बारे में बताने आया हूं। मैं शतरंज का खिलाड़ी हूं। अपनी कड़ी मेहनत से मैं ग्रैंडमास्टर बनूंगा। उसकी मां ने कहा, हमें किसी तरह की मदद नहीं चाहिए, केवल आपका आशीर्वाद लेने के लिए हम यहां आए हैं। मेरा बेटा हमेशा कहता रहता है, अगर एक नाव चलाने वाले का बेटा राष्ट्रपति बन सकता है, तो तुम्हारा बेटा भी ग्रैंडमास्टर बन सकता है।

डॉ. कलाम ने बच्चे के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, मेरा आशीर्वाद है तुम जरुर सफल होंगे । इच्छाशक्ति के बल पर तुम किसी भी मुसीबत को हरा सकते हो, पर जब तुम ग्रैंडमास्टर बन जाना, तो मुझसे वादा करो कि अपने इस सफर में मां की भूमिका को नहीं भूलाओगे, जिसने तुम्हारे सपने को पुरा करने के लिए खुदको समर्पित कर दिया है। शैलेश ने सहमति में सिर हिलाया। उसकी मां की आंखों में आंसू थे। बाद में जब हम लौट रहे थे, कलाम ने इस घटना को याद किया। क्या तुमने देखा कि मां के साहस ने किस तरह बच्चे का सपना पूरा करने में मदद की? मां का स्नेह ही वह ताकत है, जिसके बल पर वह अपने बड़े बच्चे के भार को भी आसानी से उठा सकी। यही ताकत उस बच्चे को एक दिन ग्रैंडमास्टर भी बना देगी। हर बच्चे को हर दिन एक काम जरुर करना चाहिए। वह क्या? मैंने पूछा। अपनी मां के चेहरे पर मुस्कान लानी चाहिए। जब एक मां मुस्कराती है, पूरा परिवार मुस्कराता है। जब परिवार मुस्कराता है।, तो देश खुश रहता है।

माँ

– मुनव्वर राणा

मुझे खबर नहीं जन्नत बड़ी कि मां लेकिन
लोग कहते हैं कि जन्नत बशर के नीचे है।।
मुझे कढ़े हुए तकिये की क्या जरुरत है
किसी का हाथ अभी मेरे सर के नीचे है।।
बुजुर्गों का मेरे दिल से अभी तक डर नहीं जाता
कि जब तक जागती रहती है माँ मैं घर नहीं जाता।।
मोहब्बत करते जाओ बस यही सच्ची इबादत है
मोहब्बत मां को भी मक्का–मदीना मान लेती है।।
मां ये कहती थी कि मोती हैं हमारे आंसू
इसलिए अश्कों का पानी भी बुरा नहीं लगता है।।
शहर के रास्ते हों चाहे गांव की पगडंडियां
मां की उंगली थाम कर चलना मुझे अच्छा लगता है।।
अब भी रौशन हैं तेरी याद से घर के कमरे
रोशनी देता है अब तक तेरा साया मुझको।।
मेरे चेहरे पे ममता की फरावानी चमकती है
मैं बूढ़ा हो रहा हूं फिर भी पेशानी चमकती है।।

कर्ज माफी के बजाय किसानों की आर्थिक मदद होनी चाहिये

– देविंदर शर्मा, कृषि नीति विशेषज्ञ

जब किसान पुत्र रुप सिंह और उनके छोटे भाई बसंत सिंह अपने पिता की अंत्येष्टि करके लौटे, तो उन्हें यह पता नहीं था कि नियति ने उनके पिता अवतार सिंह ने कर्ज के बढ़ते बोझ कारण खुदकुशी कर ली थी। और पिता के अंतिम संस्कार के एक दशक बाद इन दोनों भाईयों ने भी वही घातक कदम उठाया। खेती की बढ़ती ऋणग्रस्तता ने परिवार की दो पीढ़ियों को लील लिया दोनों भाई 2.5 एकड़ जमीन के मालिक थे। और 30 एकड़ अन्य जमीन पर वे अनुबंध खेती करते थे। यह अकेला मामला नहीं है, लेकिन यह बताता है कि किस तरह से खेती को लगातार नुकसान पहुंच रहा है, जिसने दशकों से किसानों की जान ली हैं। अन्य प्रांतों के साथ –साथ पंजाब के खेतों में मौत का तांडव जारी है। किसान संघो का कहना है कि कांग्रेस सरकार द्वारा कर्जमाफी की घोषणा के बावजूद एक वर्ष में ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है।

इसलिए हाल ही में जारी एक रिपोर्ट हैरान करती कि कृषि आय 15 वर्षों में सबसे निचले स्तर पर है। 'द सेंटर फॉर मॉनिटरिंग ऑफ इंडियन इकोनॉमी' (सीएमआईई) ने भी भविष्यवाणी की है कि वर्ष 2018–19 में कृषि आय नकारात्मक होगी। यह एक तरह से नीति आयोग के निष्कर्षों का विस्तार है, जिसने वर्ष 2011–12 से 2015–16 के बीच पांच वर्षों की अवधि के वास्तविक कृषि आय पर अध्ययन कर बताया था कि प्रति वर्ष कृषि आधी फीसदी फीसदी (0.44) रही।

इस तरह के निराशाजनक परिदृश्य को देखकर मुझे हैरानी होती है कि किस तरह से किसान समुदाय साल–दर साल जीवित रहता है। किसानों की आत्महत्या अतिरिक्त नुकसान तो है ही, लेकिन उन लोगों के बारे में क्या कहा जो हार नहीं मानते और सारी बाधाओं के खिलाफ संघर्ष जारी रखतें हैं? खासकर तब, जब आम तौर पर माना जाता है कि लगभग चार दशकों में कृषि की वास्तविक आय में भारी गिरावट आई है। आर्थिक सहयोग संगठन (ओईसीडी) के हालिया अध्ययन के मुताबिक 2000 से 2017 के बीच उपज का कम मूल्य दिए कारण किसानों का अनुमानतः 45 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। 'अंकटाड' द्वारा किए गए अन्य अध्ययन से पहले अनुमान लगाया था कि फसल की कीमत को मुद्रास्फीति से समायोजित करने की कोशिश का नतीजा यह हुआ कि दुनिया भर में फसल की कीमत 198 से 2005 के बीच 20 साल की अवधि में लगभग स्थिर रही। जाहिर है कि खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखने के लिए सरकारों ने किसानों को निरंतर उनकी वाजिब आमदनी से वंचित रखा है। खाद्य कीमत कम रखने का पूरा बोझ किसानों पर डाल दिया गया। यानी उपभोक्ताओं को सब्सिडी देने की पूरी लागत किसानों ने वहन की है। किसानों को जान–बूझकर कम भुगतान जा रहा है, ताकि उद्योगों को सस्ते में कच्चा माल उपलब्ध कराया जा सके। इस तरह से किसानों की मात्र दो भूमिका हैं– उपभोक्ताओं को सस्ता खाद्य उपलब्ध करवाना और उद्योगों को सस्ता कच्चा माल उपलब्ध करवाना। कर्ज में पैदा होना और जीवन भर कर्ज में डूबे रहना नर्क में रहने जैसा है। जबकि हर साल कहा जाता है कि सरकार ने किसानों के लिए ऋण सीमा बढ़ाई है। जैसे–जैसे कर्ज बढ़ता जाता है, संकट बढ़ता जाता है, पर मैंने कभी अर्थशास्त्रियों और नीति–निर्माताओं को किसानों को उचित आय देने की बात करते नहीं देखा।

हिंदी प्रदेशों में कुछ समय पहले आयोजित विधानसभा के चुनावों में प्रतिकूल चुनाव परिणाम आने के बाद केन्द्र सरकार ने पहली बार छोटे किसानों को वार्षिक छह हजार रुपये की प्रत्यक्ष आय सहायता देने के कार्यक्रम की शुरुआता की है। यह छोटी राशि आर्थिक सोच में महत्वपूर्ण बदलाव का सूचक है– यानि कर्ज से आय समर्थ की ओर।

लेकिन जो बात बहुत कम समझ में आती है, वह यह है कि कृषि आय में गिरावट उस आर्थिक मॉडल का परिणाम है, जिसका हम पालन करते हैं। आर्थिक सुधारों को जीवित रखने के लिए कृषिको जान–बूझकर दरिद्र बना दिया गया है। इसी त्रुटिपूर्ण आर्थिक सोच के साथ आगे बढ़ते हुए मुख्य आर्थिक सलाहकार ने उद्योगों में और अधिक निवेश करने का आहवान किया है, ताकि युवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में लाया जा सके। यह ठीक वही काम है, जो करने का 1996 में विश्व बैंक ने भारत को निर्देश दिया था। यह मुख्य रुप से इस कारण से है कि 2011 और 2017 के बीच कृषि क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र का निवेश जीडीपी के 0.3 से 0.5 प्रतिशत के बीच बना हुआ है। सार्वजनिक और निजी, दोनों तरह के कुल निवेश में भी लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है–2011–12 में निवेश जीडीपी का 3.1 प्रतिशत था, जो घटकर 2016–17 में 2.2 प्रतिशत रह गया। अब इसकी तुलना उद्योगों को दी जा रही रियायतों से करें, जो जीडीपी के पांच फीसदी के बराबर है। इसलिए कृषि को मारने का सबसे अच्छा तरीका इस क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश में भारी कटौती करना है, जो देश की आबादी को 52 प्रतिशत रोजगार देता है।

'सीएमआईई' की गणना के अनुसार यह हैरानी की बात नहीं कि पिछले बारह महीनों में 56.6 लाख रोजगारों का नुकसान हुआ है, उसमें से 82 फीसदी या 46 लाख रोजगारों नुकसान ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ है। यह उस आर्थिक नीति का

नतीजा है, जो ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को शहरों में धकेलना चाहता है, जिसे दिहाड़ी मजदूरों की जरुरत है। इस नीति पर गंभीरता से पुनर्विचार करने की जरुरत है। खेतों का घटता स्वामित्व काई समस्या नहीं है बल्कि किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य न मिलना बड़ी समस्या पैदा करता है।

सरकार द्वारा कृषि की जान–बूझकर उपेक्षा ने खेती को अलाभकारी और पर्यावरणीय रुप से अस्थिर बना दिया है। जिस बात पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है, वह कि भूख, गरीबी, युवाओं की बेरोजगारी, जबरन विस्थापन और जलवायु परिवर्तन जिनसे भारत जूझ रहा है, उसका दीर्घकालीन समाधान ग्रामीण क्षेत्रों में निवाश ही हो। इन तमाम समस्याओं की गहरी जड़ें ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। चूंकि कृषि प्रधान ग्रामीण व्यवस्था है, इसलिए किसी भी समझदार आर्थिक नीति का जोर कृषि को एक आर्थिक गतिविधि के रुप में मानने से शुरु होती है। अकेले इस क्षेत्र में लाखों आजीविका को बनाए रखने की क्षमता है और इस तरह यह अर्थव्यवस्था को फिर से मजबूत बना सकता है।

मोदी सरकार के सामने-खेती-किसानी की चुनौती

– सोमपाल शास्त्री, पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री

ग्रामीण वर्ग में खेती–किसानी की समस्या आज सबसे बड़ा मुद्दा है। किसानों को अपनी उपज का वाजिब दाम नहीं मिलता। उसकी फसल खेतों में, मडियों में पड़ी सड़ जाती है। समय पर भुगतान नहीं होता। कर्ज में डूबे किसान आत्महत्या करने पर मजबूर होते हैं। कर्ज में डूबे हजारों किसान हर वर्ष खुदकुशी करते हैं। गत 4–5 वर्षों में देश भर के किसानों ने नई दिल्ली में सैंकड़ों धरने प्रदर्शन किय और प्रधानमंत्री जी से गुहार लगाई। एक बार भी प्रधानमंत्री ने उनसे मुलाकात नहीं की। किसानों से उन्हें ऐसी क्या नफरत है? सारी जनता का स्वयं प्रधानमंत्री जी भी खेती–बाड़ी के जरिये फल –सब्जी व अनाज से पेट भरने वाला किसान खुद क्यों संकट में हो? यह विचारणीय मुद्दा है। पूर्व कृषि मंत्री सोमपाल शास्त्री जी का यह सारगर्भित लेख पाठको का ज्ञानवर्धक करेगा।

नरेन्द्र मोदी ने अपने कार्यकाल के पांच साल पूरे किए और दोबारा चुनकर सरकार में आए इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। हालांकि इस अवसर पर यह लेखा–जोखा होना आवश्यक है कि मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में किस प्रकार काम किया, किन मुद्दों पर सफल रहे और किन कामों में खामी रह गई। मौजूदा परिदृश्य में भारतीय कृषि और कृषक की समस्याओं और उनके निदान पर चर्चा करना जरुरी है।

सबसे पहले बात आती है वर्ष 2014 के आम चुनाव के दौरान प्रकाशित भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के घोषणापत्र की। देशवासियों विशेषकर किसानों को यह भलीभांति स्मरण होगा कि उस घोषणा पत्र में किसानों के लिए प्रमुखतम वादा 'स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने का था।' उसमें भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण था किसानों के उत्पादों का सी–2 लागत के ऊपर 50 फीसद जोड़कर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित करना। यह भी प्रतिबद्धता स्पष्ट रुप से प्रकट की गई थी कि उन मूल्यों के ऊपर पूरे देश में और सभी 27 जिंसों की खरीद सुनिश्चित की जाएगी।

इसके अतिरिक्त, मंडी कानून में संशोधन का आश्वासन भी दिया था जिससे मंडी में सरकार द्वारा प्रदत्त लाइसेंसों की एकाधिकारी शक्ति के कारण किसान उन्ही सीमित व्यापारियों को अपने उत्पाद बेचने को बाध्य रहता है। जाहिर है कि इस तरह उनका शोषण होता है। दूसरी ओर, मंडी में किसान को दिए गए मूल्य के मुकाबले उसी दिन बाजार में उपभाक्ताओं से कई–कई गुना कीमत वसूली जाती है। तो भाजपा के पिछले घोषणापत्र में इस शोषणकारी व्यवस्था का अंत करने का वादाकिया गया था। इसी प्रकार, कृषि उत्पादों के निर्यात पर लगे प्रतिबंध और कम सीमा शुल्क पर विदेशों से आयात किए जा रहे कृषि उत्पाद खेती के देसी उत्पाद के बाजार को सीमित करने का काम करते हैं। परिणामतः किसानों को अपेक्षित मूल्य से काफी कम मूल्य से काफी कम मूल्य हासिल होता है। इन दोनों दिशाओं में भी सुधार करने की बात कही गई थी।

पहला कार्यकाल निश्प्रभावी रहा

भाजपा, आरएसएस और उसके आनुषंगिक किसान संघ जैसे संगठन उपरोक्त दोनों बातों पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)के जन्मकाल के पूर्व से ही बहुत मुखर रहे हैं। इन सब मुद्दों के ऊपर नरेन्द्र मोदी सरकार (प्रथम) का आचरण न केवल प्रश्नचिन्ह लगाने वाला रहा बल्कि खुले रुप से प्रमाणतः किसान विरोधी रहा। अपने कार्यकाल के अंतिम वर्ष में उन्होंने लागत का 1.5 गुना मूल्य देने की आधी–अधूरी घोषणा की। दूसरी दुखद विडंबना यह है कि चालाक नौकरशाही के सुझाव पर स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश को तोड़–मरोड़कर ए–2 प्लस एफएल के ऊपर 50 फीसदी जोड़कर न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किए गए और धड़ल्ले से यह दावा कर दिया कि हमने स्वामीनाथन आयोग की रपट को लागू कर दिया है। यह किसानों की आंखों में धूल झोंकने के अलावा कुछ नहीं है। यहां जो मुद्दे गिनाए गए हैं, उनके ऊपर भी कोई सकारात्मक या प्रभावी कारवाई करने के लक्षण दूर–दूर तक

दिखाई नहीं दिए। इस दृष्टि से मोदी की पहली सरकार का प्रदर्शन सर्वथा निराशाजनक रहा।

खेती के मामले में भूमि के साथ–साथ इतना ही महत्वपूर्ण योगदायक कारक पानी होता है। इस बात का प्रमाण यह है कि पूरे विश्व में प्रशंसित भारत की हरित क्रांति केवल उन्हीं क्षेत्रों में सीमित रही है, जहां सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था उपलब्ध है। विडंबना यह है कि ऐसे क्षेत्र पूरी खेतीबाड़ी के केवल 45 फीसदी है। शेष 55 फीसदी में अभी भी खेती निरी वर्षा पर आधारित है। इसका दुष्परिणाम यह है कि इन सिंचाई रहित शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में प्रति हैक्टेयर में प्रति हैक्टेयर उत्पादकता अरसे से 1.2 टन पर अटकी है, जबकि पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और अन्य सिंचाई क्षेत्रों में औसत उत्पादकता चार टन प्रति हैक्टेयर के करीब है। कही–कहीं तो किसानों ने हैक्टेयर ने प्रति हैक्टेयर 11 टन तक अन्न उपजाया है। इस विषमता के फलस्वरुप असिंचित क्षेत्रों के किसान और पूरे ग्रामीण जन गरीबी के अंधकार में जीने को मजबूर हैं। भारत सरकार के आंकड़ें दर्शाते हैं कि पूरे देश के ग्रामीण गरीबों की 82 फीसदी गरीबी इन्हीं क्षेत्रों में हैं। अतः पूरे देश के लिए दीर्घकालीन, समग्र और समेकित सिंचाई योजना की आवश्यकता है, जिसकी पूर्ण रुपरेखा मेरे कृषि मंत्री कार्यकाल में मैंने स्वयं योजना आयोग का सदस्य रहते हुए भारत सरकार को प्रस्तुत की थी। इस पर आज तक किसी भी सरकार ने ठोस कार्रवाई नहीं की। मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री सिंचाई योजना जैसा आकर्षक नाम देकर यह वातावरण बनाने का प्रयास किया था कि वह हर खेत को पानी पहुंचाएंगे। परंतु प्रधानमंत्री सिंचाई नाम की यह योजना केवल पूर्व की विभिन्न छाटी–छोटी योजनाओं को एक शीर्षक के अंतर्गत लाकर उसे एक महती सार्वदेशिक योजना बताने का ढोंग मात्र साबित हुई।

सम्मान योजना से बढ़ेगा भ्रष्टाचार

इस आम चुनाव से ठीक पहले 'किसान सम्मान योजना' का टोकन प्रावधान करके अपने अपने चुनावी प्रबंधन की कुशलता और फौरी लोकप्रियता अर्जित करने की लालसा का भी प्रदर्शन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कर डाला। मैं फिरजोर देकर कहना चाहता हूं कि यह उपाय भी पूर्ण रुप से निष्प्रभावी और सरकारी योजनाओं की संख्या को बढ़ाकार प्रशासन की जटिलता और तद्जनित स्वाभाविक सरकारी भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति को पनपने और वर्द्धित करने का काम करेगा। लगभग दो दशको से अनाज का आवश्यकता से अधिक उत्पादन के कारण बहुत–सा अनाज अनुपयुक्त हो जाता है और सड़कर खराब हो जाता है। इसके निदान के लिए सरकार ने किसान को कृषि के विविधिकरण का उपदेश देना शुरु किया। किसान ने उसको हृदयंगम करके फल, सब्जी, मुर्गीपालन, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन के काम करने लगे। इन सबके बाजार मूल्यों की जो दुर्गति हुई वह सारा देश जानता है। इस कारण किसान का खेती के इन पक्षों से भी मोहभंग हो गया।

सबके आकर्षक और जादुई नारा मोदी ने किसानों की आय को वर्ष 2022 तक दोगूना करने का स्वप्न दिखाया। दुनिया भर का कोई प्रतिभाशाली राजनेता, विद्वान अर्थशास्त्री या कुशल से कुशल प्रशासक अगर सिद्वांत रुप से भी यह बात कह सके कि इस योजना का रोडमैप क्या है और क्या यह व्यवहारिक भी है या नहीं तो मैं उसे अपना गुरु स्वीकार कर लूंगा। यह तथाकथित लक्ष्य आगामी तीन वर्षों में प्राप्त करना हो खेती के विकास की ही नहीं बल्कि किसान की आमदनी की वृद्धि दर कम से कम 28 से 30 फीसदी होनी आवश्यक है, जबकि गत पांच वर्षों में यह दर सिर्फ 2.3 फीसदी के स्तर पर अटकी हुई है। क्या कभी ऐसा हो सकता है कि इसे अकस्मात 12 से 13 गुनी बढ़ाई जा सके? परंतु मोदी के जादुई वक्तव्यों में उन्ही की भाषा में 'मोदी है तो मुमकिन।' प्रधानमंत्री को यह बात भी समझ में आनी चाहिए कि भारतीय अर्थव्यवस्था के कृषि से भिन्न जो दूसरे घटक हैं जैसे उद्योग और सेवा क्षेत्र उनके विकास के लिए आवश्यक 60 फीसद से ज्यादा मांग ग्रामीण क्षेत्रों सेही आती है और जब तक कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों से ही आती है और जब तक कृषि और ग्रामीण क्षेत्र की प्रगति नहीं होगी, इन दूसरे घटको की प्रगति भी बाधित रहेगी।

इन सभी मुद्दों के ऐसे समाधान हैं, जो राष्ट्र और सरकार के पास उपलब्ध वित्तीय एवं अन्य संसाधनों में लागू करने संभव है। दूसरी बात, देश में वर्तमान संवैधानिक वैधानिक, प्रशासनिक और वित्तीय व्यवस्था के अंतर्गत ही उन्हें कारगर रुप से क्रियान्वित भी किया जा सकता है। परंतु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को न तो इन मुद्दों के ऊपर चिंतन करने का अवकाश मिला है और न उनके मंत्रिमंडल और प्रशासकों की टीम में किसी व्यक्ति को इन विषयों पर सोचने की रुची और उपायों को व्यावहारिक रुप देने की योग्यता कहीं दूर–दूर तक दिखाई नहीं देती है। मेरा सुझाव है कि प्रधानमंत्री कृषि से जुड़े विशेषज्ञों का एक, दो या तीन दिवसीय सम्मेलन संवाद अपनी पूर्णकालिक उपस्थिति में कराएं और उसमें से उभरी सिफारिशों को प्रभावी रुप से लागू करने की एक समयबद्ध लक्ष्यपरक योजना बनाएं। यदि ऐसा कर सकें तो वह भारतीय राजनीति के ही नहीं बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक पुरोधा बन जाएंगे। मैं मोदी के निर्णय लेने की क्षमता को भलीभांति जानता हूं। यदि वह विषय में रुची ले लें तो निशचित रुप से विस्मयकारी परिवर्तन मुमकिन हैं।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

जीवन की संगत रंगत

– आर.एन. मलिक

कौन कहता है कि जैसी संगत होगी वैसी रंगत होगी, क्योंकि आजकल का मनुष्य लोमड़ी के साथ तो नहीं रहता, लेकिन फिर भी वो शातिर और लालची है, शेर के साथ भी नहीं रहता फिर भी गुरूर में रहता है। और तो और बड़े ही हैरानी की बात है कि वो कुत्ते के साथ रहता है फिर भी उसके जैसा वफादार नहीं है, कागजों को जोड़ने वाली पिन ही कागजों को चुभती है, ठीक उसी प्रकार परिवार को भी वही व्यक्ति चुभता है जो परिवार को जोड़कर रखता है। आजकल यादाश्त का कमजोर होना कोई बुरी बात नहीं क्योंकि आप खुद महसूस करते हैं कि वो लोग बहुत बेचैन होते हैं जिन्हें हर बात याद रहती है। बड़े ही आश्चर्य की बात है जब जेब में रूपये हों तो दुनिया आपकी औकात देखती है, जब जेब में रूपये ना हों तो दुनिया अपनी औकात दिखाती है, अकेलेपन से मत डरिये क्योंकि पर्वतों की ऊंचाइयों पर इंसान अकेला ही होता है। वहां तक चढ़ पाने की हिम्मत हर इंसान में नहीं होती। कभी–कभी मेरे दिल में ये सवाल आता है कि तोता तो मिर्च खाता है, वो मिर्च खाके भी इतना मीठा बोलता है लेकिन इंसान इतनी महंगी चीनी खाने के बाद भी इतना कड़वा कैसे बोल लेता है, अच्छा दिल और अच्छा स्वभाव दोनों आवश्यक हैं। क्योंकि अच्छे दिल से कई रिश्ते बनेंगे और अच्छे स्वभाव से ही तो वो जीवन भर टिकेंगे। दोस्त हो या परिंदा दोनों को आजाद छोड़ दीजिये, आया तो आपका और ना आया तो आपका कभी था ही नहीं। किसी ने एक व्यक्ति से पूछा कि जिंदगी क्या है.....??? उस दूसरे व्यक्ति ने जवाब दिया, जीवन की आधी उम्र तक पैसा कमाया पैसा कमाने में इस शरीर को खराब किया बाकी आधी उम्र तक उस पैसे को शरीर ठीक करने में लगाया और अंत में ना शरीर बचा ना पैसा। इसी का नाम जिंदगी है। बहुत ही अजीब बात है कि एक मानव ही धन कमाता है और अन्य जीव कभी भुखा भी नहीं मरा और मानव का कभी पेट भी नहीं भरा। हमेशा खुश रहना चाहिये क्योंकि परेशान रहने से कल की मुश्किल दूर नहीं होती बल्कि आज का सुकून भी चला जाता है। बेहद ही खूबसूरत बात है कि घर में स्त्री सबका मन रखती है लेकिन पता नहीं क्यों सब भूल जाते हैं कि वो स्त्री भी एक मन रखती है। ये जो आपकी और हमारी जिंदगी है ये बहुत सस्ती है, बस इसे गुजारने के तरीके महंगे हैं। एक समर्थ व्यक्ति के पीछे उसके कई समर्थ साथी भी होते हैं और आपको उन्हें समर्थ व्यक्तियों को खोजकर उनके साथ रहना है। वक्त का काम तो गुजरना है, बुरा हो तो सब्र कीजिये, अच्छा हो तो शुक्र कीजिये। साथ रहकर जो छल करे उससे बड़ा कोई शत्रु नहीं हो सकता और हमारे मुंह पर हमारी बुराईयां बता दें, उससे बड़ा कोई मित्र नहीं। लाईफ में दो लोगों से हमेशा दूर रहियेगा, पहला बिजी और दूसरा घमंडी क्योंकि बिजी आदमी अपनी मर्जी से बात करेगा और घमंडी अपने मतलब से याद करेगा। जो दौड़–दौड़ कर भी नहीं मिलता, वही संसार है और जो बिना दौड़े मिल जाता है वह प्रमात्मा है। बहुत सच्ची बात है दुनिया में झूठे लोगों को बड़े ज्यादा हुनर आते हैं और सच्चे लोग तो आरोपों से ही मर जाते हैं। अपने गुस्से पर काबू रखना सीखिए क्योंकि गुस्से से बोला हुआ कठोर शब्द इतना जहरीला होता है कि वो पकी हुई एक हजार प्यारी बातों को केवल एक मिनट में नष्ट कर सकता है। खुदा ने क्या चीज बनाई है धन। लगभग अपने जीवन तक सभी इकट्ठा करने में ही लगे रहते हैं, जीवन की सबसे महंगी चीज है आपका वर्तमान जो एक बार चला जाये तो पूरी दुनिया की संपति से भी आप उसे खरीद नहीं सकते। प्रेम और आस्था दोनों पर ही किसी का जोर नहीं है। ये मन जहां लग जाये वहीं रम जाता है। आज भी जमाना इसी बात से जलता है कि ये आदमी इतनी ठोकर खाके भी सीधा कैसे चलता है। सच्चाई है कि हर तकलीफ में इंसान का दिल दुखता बहुत है, पर असली सच्चाई यही है कि हर तकलीफ से इंसान सीखता भी बहुत है, जो गिरकर संभल जाता है सही मायनों में जिंदगी को समझ जाता है। सोचने वाली बात है पाप शरीर नहीं करता, विचार करते हैं और गंगा विचारों को नहीं बल्कि शरीर को धोती है। बिना सोचे यदि आपने किसी पर विश्वास किया तो यकीनन आपको बहुत सोचना पड़ेगा। सहने वाला जब जुल्म सहकर मुस्करा दे तो उस इंसान का बदला भगवान लेता है।

रोचकः जब एक अंग्रेज अफसर पर बना जाट बनने का जुनून

– डॉ. केसी यादव

जॉन लारेंस भारत में अंग्रेजी राज के सुदृढीकरण करने वाले लोगों में से एक था। सन 1857 की क्रांति के समय तो उसने ऐसी जबरदस्त भूमिका निभाई की इतिहासकार कहते हैं कि यदि जॉन लॉरेंस न होता तो 1857 में ही अंग्रेजी राज का खात्मा हो जाता। वह उन दिनों पंजाब का चीफ कमिश्नर था। उसने तुरंत सेना भेजकर दिल्ली के बंद दरवाजे खोल डाले। बाद में जॉन लॉरेंस भारत का गवर्नर जनरल व वायसराय बना। जॉन लॉरेंस भारतीय सिविल सर्विस का आदमी था। ज्यों ही वह सिविल सर्विस में आया, उसे हरियाणा में तैनात किया गया। वह यहां पर अस्सिटेंट बना और इस पद पर लगभग एक दशाब्द तक रहा। इससे पहले वह देहली जिले में था। 1831 से 1834 तक, बाद में पानीचत चला आया। 1834 से 1837 तक वह पानीपत में ही रहा,

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

फिर उसने गुडगांव संभाला और आखिर में कुछ दिन दिल्ली और कुछ दिन करनाल में रहा।

वह बहुत ही चतुर अफसर था। अंग्रेज भारत में कैसे राज करें, इस बात को समझने के लिए वह हमेशा कोशिश करता रहता। उसने इसके लिए बारीकि से यहां का अध्ययन किया। इसके साथ ही उसके दिल में लोगों के दिल में जगह बनाने की गहरी हसरत भी थी। इस काम के लिए वह अपने और हरियाणावासियों के बीच एक खास रिश्ता बनाने की कोशिश करता।

खास तौर पर किसान कौम जाटों के प्रति तो उसका आकर्षण एक जुनून में ही बदल गया था। वह इस काम को करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार था और तरह तरह के कष्ट भी भोग लेता था। उसका एक उदाहरण आप जानकर हैरान रह जाएंगे। बात उन दिनों की है, जब पानीपत जिले का प्रशासन संभाले हुए था। यहां उसकी प्रजा अधिकतर जाट ही थी और उनकी आबादी उस समय करीब चार लाख रही होगी। जॉन लॉरेंस लंबे कद का, पतला और मजबूत जवान था। कहीं भी एक छटांक मांस भी उसके शरीर पर नहीं होता था। बनावट में वह हरियाणा के जाटों जैसा था लेकिन था अंग्रेज ही। उसने मूंछे भी जाटों जैसी ही रखनी शुरू कर कर दी पर चमडी तो वैसी ही थी गोरी। लेकिन जॉन हार मानने वालों में नहीं था। वह कमीज निकालता और घंटों धूप में खडा रहता। लंबे समय तक यह अभ्यास करने के बाद काफी हद तक उसकी चमडी भी जाटों जैसी हो गई थी। वो अक्सर लोगों से पूछता कि क्या वो जाट जैसा दिखता है। मुझमें और मेरी प्रजा में कोई फर्क नहीं है अब।

बात इतने से खत्म नहीं हुई। जॉन लारेंस ने जाटों की तरह बोलना भी सीखा। किस्से, लतीफे और कहानियां तक याद कर ली। यहां के सारे रीति रिवाज ना केवल जानें बल्कि खुद भी त्यौहार मनाता था। वह घोडे की पीठ पर बैठता और दूर दूर तक निकल जाता। फिर कहीं गांव के एक पेड के नीचे चारपाई पर बैठ जाता और लोगों से उन्हीं की भाषा में गप्पे लडाता। खूब हंसी मजाक करता। गांव वालों की समस्याएं भी सुनता और वहीं बैठे बैठे हल भी कर देता। गांव के नाई से अलग से लतीफे सुनता। किसी किसी युवक से पंजा भी लडा बैठता। उसने हुकका पीना भी सीख लिया और खूब कश लगाता। इस तरह सात समुद्र पार से आया एक अंग्रेज देखते ही देखते न केवल जाटों जैसा दिखाई देने लगा बल्कि जाटों जैसा हुबहू बना भी। अफसर के रूप में वो जितना लोकप्रिय हुआ उसका उदाहरण आज भी देखने सुनने को कम ही मिलता है।

जीवन जीने के लिये क्या दुःख सुख साथ साथ है?

– डॉ0 रणबीर सिंह सन्धू

पहले तो यह जाने की यह जीवन क्या है। यह जीवन हर मानव का 60–100 वर्ष का एक खेल है, या ऐसे समझिये कि यह ड्रामा है, सभी मनुष्य इस रंगमंच पर खेल लेने के बाद मौत की आगोश में चले जाते हैं, जो यहां पर आया है अपना पार्ट खेलकर इस दुनिया से कूच कर चलता बनता है। कितना अदभुत ड्रामा है, कोई मरना भी नहीं चाहता पर यह है ही सौ फीसदी सत्य कि मानव खाली हाथ बन्द मुठ्ठी आता है, यात्रा पूरी कर खाली हाथ व खुले हाथ वापिस चला जाता है, तो जीवन भर जो उनसे अच्छे बुरे कर्म किए है, वह इन्हें किए हुए अपने कर्मों को अपने साथ उनका फल भोगने के लिये अपने जन्म की यात्रा उन कर्मों के भाग्य से शुरु कर देता है, इसी तरह वह अपने पिछले किए कर्मों को जो अच्छे या बुरे उन्हे लेकर इस जीवन में प्रवेश करता है, तब उन पूर्व जन्मों के कर्म फलों व पाप या पुण्य लेकर आता है और इस संसार में शरीर धारण करता है, वह पुरुष या स्त्री या कभी किनर भी हो सकते हैं, ये सब उसके यहां पर दुःख सुख दोनों भोगता है व कर्म करता है, ये सब आत्मा शरीर करवाती है, क्योंकि आत्मा अविनाशी व कभी मरती नहीं। एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर लेती रहती है, शरीर ही खाक होता है। इस तरह जीवन का चक्र चलता रहता है। यह एक प्रकार का खेल कुछ मानव 50 वर्ष या 100 वर्ष भोग कर चलते बनते हैं, इस जीवन में हर मानव के कुछ मित्र व कुछ शत्रु बनते जाते हैं जो उसके सारे जीवन चक्र को चलाते हैं। यह मित्र व शत्रु उसके ये दो विचार ही है,एक मित्र साकारात्मक विचार और दूसरे शत्रु नाकारात्मक विचार (दुश्मन) पर कभी कभी मिश्रित भी हो जाते है जो कभी कभी बनते हैं उन्हें मध्यस्था कहते हैं, हर मानव को इन विचारों की ही लड़ाई है वह सारा जीवन इन्हीं विचारों के खेल में पूरा कर लेता है,इसमें कभी मित्र हावी हो जाता है, कभी दुश्मन क्योंकि इस खेल में वही जीतता है जो अधिक शक्तिशाली होकर पहले प्रहार कर देता है। कहते भी है कि जब पाप की पूंजी खर्च होती है तो पाप (दुःख) आते हैं और जब पुण्य की पूंजी खर्च होती है तो सुख प्राप्त होते हैं। यही जीवन का अटल सत्य है। जब काई बच्चा किसी अमीर व्यक्ति के घर में जन्म लेता है तब उसके जन्म के साथ ही उसके पालन पोषण के साधन पहले से ही भरपूर मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं जैसे कि अच्छा बड़ा मकान, बड़ी कार व हर प्रकार से भरपुर परिवार। फिर वह मानव यहां कर्म करता है। जैसा कर्म करता है उसी प्रकार के अनुसार उसका लेखा जोखा जमा होता है परन्तु आशचर्य तो यह है कि उसे पिछले जन्मों का कुछ पता नहीं होता क्योंकि मानव को केवल इस जन्म का ही पता होता है ना भूत का ना भविष्य का। इसलिये खुश जीवन जीने के लिये हर मानव को वर्तमान जीने की चाह रखनी चाहिए क्योंकि हर मानव को ये चाह सबसे अधिक दुःख देती है। एक चाह पूरी होती है, दूसरी शुरु हो जाती है जोकि कभी कभी पूरी होती ही नहीं है। वह क्रोध से तिलतिला उठता है। वह फिर उसके ये दुश्मन विचार रावण के बन्धु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष चुग्ली, लालच) हावी हो जाते हैं वह दुःखों के झंझाल में फंसता चला जाता है जिससे वह कभी निकल ही नहीं सकता फिर वही सबसे अधिक दुःखी होता है मानव को केवल खुशी व शांति से जीने के लिये

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

केवल अपने साकारात्मक विचारों को बढ़ाने की जरुरत है, इसके लिए उसे कड़ी मेहनत, शैर्य व सन्तुष्टता का पाठ पक्का करना होगा न कि अगले सात जन्मों व 21 जन्मों के लिए मरने की है परन्तु हमारे भारतवर्ष में यही प्रथा अधिक प्रचलित है कि हर कोई खुद को दुःखों को सहन करते हुए अगले जन्मों के लिए इकट्ठा करता है, जबकि उसे भविष्य का कुछ पता नहीं है, अच्छा तो ये है कि हर मानव को यहां खूब मेहनत करते हुए पहले स्वयं की आदतों को नियंत्रण करे। अच्छी मेहनत से कार्य करें। दूसरे दुःखी मानव को समय पर जिस प्रकार की उसे सहायता की आवश्यकता है उसे प्रदान करने की कोशिश करे। अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा व अच्छे संस्कार देते हुए उसे उसके कार्य के योग्य बनाएं कि वह आगे चलकर किसी पर निर्भर न हो, यही सबसे बड़ी पूंजी है। यही वह जो आगे भी जन्मों में काम आऐगे जोकि तुम अब भाग रहे हो। कहते हैं कि मानव अपने जन्म के साथ पूर्व जन्मों के कर्मफल उच्च प्रारबध लेकर आता है अर्थात पूर्व जन्म में जो पुण्य कर्म किए थे उसके फलस्वरुप उसका जन्म उच्च परिवार में हुआ, वही एक बच्चा जिसका जन्म बेहद गरीब परिवार में होता है, जहाँ न तो उसके खाने पीने व रहने सहने की अच्छी अवस्था नहीं है कई बार बीमार पड़ते रहते हैं। समय पर इलाज की सुविधा नहीं प्राप्त होती है, ये सब पूर्वजनों के कर्म का फल ही है जिसके द्वारा व्यक्ति का भाग्य निर्धारित होता है, यहाँ मैं केवल यह बताना चाह रहा हूँ कि अब तक विवेकपूर्ण जीवन को देखते है। तो दुःख के समय हमें विनम्रपूर्व यह विचार करना कि जो दुःख है वह हमारे द्वारा जमा पापों की पूंजी का फल है, अर्थात दुःखआने का अर्थ हुआ कि हमारे पाप की पूंजी समाप्त हो रही है, यहां पर हम पापों के समाप्त होते देख दुःखों में धैर्य रखना चाहिए। इस प्रकार हम दुःख के आने पर भी दुःखी नहीं होते क्योंकि धैर्य से हमने अपनी आत्मशक्ति को सुदृढ़ (ताकतवर) बना लिया होता है। इसे हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि दुःख आने का मूल कारण है पाप का फल दुःख के बाद सुख आयेंगे ही जैसे रात के बाद दिन तो निकलती ही है, इसी प्रकार जब मनुष्य को सुख प्राप्त होता है समझो यह आपके पुण्य कर्मों का फल है अर्थात पुण्य की पूंजी समाप्त हो रही है यहां पर विवेकजन सुख आने पर शुभ कार्य करते हैं दान–पुण्य करने लग जाते है। हवन वगैर करते है, हस्पताल, अनथालय में दान व सेवा करने जाने लग जाते हैं। प्रभुभक्ति, ध्यान योग व तीर्थ यात्राओं पर जाने लगते हैं सोचते हैं कि उनकी पूंजी को और बढ़ाते है। तथा सदा सत्यकर्मों में लग पड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्य कितना भी सुख–दुःख आये उसे स्वयं को सदैव सत्कर्मों में लगाए रखना चाहिए। जरुरतमंदों की कठिनाईयों में उनकी जैसे उनको जरुरत है समय पर सहायता करनी चाहिए, जिसमें तुम्हें खुशी का अनुभव हो। मनुष्यों को भूलकर भी किसी को किसी प्रकार का दुःख तकलीफ न दे बल्कि समय पर उसे धैर्य के साथ सहायता करे, हौंसला बढ़ायें, धीरज रखें सबसे जरुरी है, उसका विवेकपूर्ण जीवन जीना ही उसे दुःख होने से बचा सकता है क्योंकि ये खेल ही इन दो विचारों का है जो मनुष्य के अन्दर एक दिन में 60 हजार के करीब बनते हैं व बिगड़ते रहते हैं। इनमें साकारात्मक व नारात्मक होते हैं। इसमें साकारात्मक हमारे मित्र हैं जो हर समय अच्छा करने के लिए उत्साहित करते रहते हैं कि अच्छा कार्य करो तथा दूसरे नाकारात्मक जिन्हें हम दुश्मन की संज्ञा देते है ये नुकसान देने के लिए उकसाते रहते हैं, छल–कपट, ईर्ष्या–द्वेष इत्यादि इन्हें कभी भी भूलकर पनपने न दे क्योंकि आज सारा संसार इस रावण युद्ध से ग्रसित होता जा रहा है, इन्हीं नाकारात्मक की अधिकता से आज सारे विश्व में भूचाल के बाद भिन्न–भिन्न प्रकार की बीमारियां खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। भिन्न–भिन प्रकार के एटम व हाईड्रोजन बम्म बनाये जा रहे हैं जो हर मानव को डर की छाया में जीने को मजबूर कर रहे हैं। आज कोई भी मानव सुख की सांस नहीं ले रहा है बल्कि सब डर के साये में जीन को मजबूर हैं। ये सब विनाश के लिए ही बनाये जा रहे हैं, दिखाने के लिए नहीं, इन डर से बचने के लिए केवल अपने साकारात्मक विचारों की संख्या बढ़ानी चाहिए। ये केवल योग, मेडीअेशन व एक शिव बाबा को याद करके, अच्छी संगत से अच्छे गुणकारी विचारों को सुनने, धारण करने व स्वयं को उसके प्रति समर्पित करके व दृढ़ संकल्प करके, पवित्र रहने, शुद्ध शकाहारी पौष्टिक भोजन ग्रहण करने से, मानव सेवा से, दृष्टि से सृष्टि को अच्छा अनुभव करने व करवाने से अर्न्तमुखी अनुभव करने से बाह्य आकर्षण में न फंस कर अन्दर को उज्जवल बनाकार जो हमें ताकत प्राप्त होती है उसे पहले स्वयं को ठीक करें एवं चिन्तम में लगाकर दूसरों को शुभचिन्तक बनने से प्रेरणा देकर हम अपने जीवन को अनमोल बना सकते हैं कोई भी कार्य बिना सन्तुष्टी व रहम दिल के पूरा नहीं हो सकता। इसलिए सन्तुष्टता का पाठ ग्रहण करते हुए मोह व लालच से दूर रहकर मायाजीत बनना है। सदा हर कार्य में उन्हें साथ लेकर चलने मे सबकी भलाई है। हमें धैर्य से मेहनत पूरी लग्न से करने से काई भी कार्य उसे पूर्ण करने का पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। क्योंकि जो कार्य बाबा की याद में किया है हर हालात में समय से पहले पूरा जरुर हो जाता है। पूरा होने का सवाल ही पैदा नहीं होता, क्योंकि अशान्ति के लिए क्या कुछ विश्व में कार्यक्रम करते हैं। कितना पैसा व समय इन पर लगा रहे है पर शान्ति को प्राप्त करने में असफल हो रहे हैं। पर हमने अपनी शान्ति को कभी मिटने नहीं देना, इसके लिए सदा प्रयास करते रहना होगा, क्योंकि आज हर मानव अशांत व डर के घेरे में जी रहा है बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि मानव आज डर से सारे कार्य उल्ट–पुल्ट कर रहा है, बैचेन नजर आता है क्योंकि आज कोई भी मानव शान्त रह ही नहीं सकता। वह सब कोई अशान्त उलझनों में उलझे हुए अशान्त महसूस करता हैं इस जहां पर कुठ ऐसी प्रतीत नहीं होता जो हमें सच्ची और हमेशा के लिए शांति दे सके। इस कलियुग में सभी दुखी व आशांत हैं। यह युग है ही दुःखों का घर, सुख व खुशी तो केवल पलभर के लिए पर जिसे हम अल्पकाल की खुशी के सुख समझ लेते है वह केवल पल वर के बाद उडन छूं हो जाती है। इस संसार में हर मानव अमीर साहूकार अच्छा पद प्राप्त करने के लिए के लिए क्या कुछ झूठे वायदों की भरमार करते नहीं थकता। प्रधानमंत्री भी क्यों न बन जाए पर सबका जीवन किसी न किसी समस्या से धिरा रहता है। जितना बड़ा पद उतना ही अधिक दुःखी, बिना नींद की गोली के एक पल भी ठीक से सो नहीं सकता।

दूसरी तरफ एक गरीब मजदूर कुछ पल ठीक से सो सकता है, इसमें कौन अधिक सुखी है वह गरीब किसान या बड़ा आदमी जो हर वक्त डर की छाया में गार्डें की छाया में रहता है। यह है अद्भुत जीवन जीने की राह जिसमें हर समय दुःख व सुख साथ–साथ चलते रहते हैं। कहते

हैं कि 75 प्रतिशत सुख अधिक हैं दुःख तो केवल 25 प्रतिशत हैं। यह कहां तक सच है। यह तो सब समझ चुके होंगे कि जो अच्छा भलाई, सेवा का कार्य करेगा, उसे सुख व शान्ति व खुशी यहां पर भी मिलेगी व अगले जन्मों में भी प्राप्त होगी। हमारे खाते में हमारे कर्मों के गुण दोष हम समय में जमा होते रहते हैं व इसका रिकार्ड हम सब समझते भी हैं। वही सदा खुश व सुख महसूस करता है जो गफलत करता है वह सदा पछताता ही रहता है, यहां पर ऐसा कोई मानव नहीं है जो कभी बीमार या दुःखों में नहीं आया होगा। हर मानव को कोई न कोई दुःख या बीमारी जरुर आई होगी, परन्तु निश्चित रुप से ऐसा समय भी आता है जब हमें अल्पकाल की जीवन में खुशियों का अनुभव होता है। हालांकि वे खुशियां हमें शांति तो नहीं प्रदान कर सकती फिर भी भी हमें अच्छा अहसास जरुर देती है। दिक्कत यह है कि खुशियां भी क्षणभंगुर ही होती है, जल्द ही हम किसी तनाव, इच्छा या उलझन से, परेशानियों से ग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए हमें महसूस होने लगता है कि जीवन में वास्तविक और टिकाऊ शांति पाना नामुमकिन है, लेकिन यह सच है कि जीवन में सच्ची शांति हम इस जीवन में भी पा सकते हैं हमें बस अपने जीवन के जीने का नजरिये को बदलना है। जीवन के उतार–चढ़ाव को सहना है। हमें अपनी सहनशक्ति को मजबूत करना है क्योंकि हर मानव में कोई न कोई गुण आठ शक्तियों से भरपूर है ही। ये खजाना उस शिव बाबा ने हमें सब मानव को दिया हुआ है उन्हें समय पर ठीक ठीक ढेग से प्रयोग करके हम अपने जीवन को कुछ हद तक शांत रख सकते हैं।

आमतौर पर हम शांति की तलाश बाहरी जगत में, जंगलों, मंदिरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों, तीर्थयात्राओं पर जाने से, भौतिक वस्तुओं में सामाजिक सम्मानों और रिश्तेनातों में शांति तलाशते फिरते हैं। मैं को अधिक अधिपत्य देते रहते हैं। इनमें से किसी को भी खो जाने से परेशान हो जाते हैं। इससे हमारे मन की शांति भंग हो जाती है। इनमें से किसी को खो जाने पर मन परेशान हो जाते हैं। इनमें से किसी को भी मान्यता न देकर केवल अपने अंतर्मन से बुद्धि व दिल की सुनकार सच्चे मन से उस शिव बाबा को निश्चय बुद्धि से याद करके अतंर्मन की खुशी प्राप्त करने से वह खुशी कभी मिट नहीं सकती। वह शांति दे सकती है व खुशियों से भर सकती है। सच्चे मन से ध्यान द्वारा अंर्तमुखी होकर बाबा को बार–बार अभ्यास व अनुभवों से उस दिव्य ज्योति का अनुभव लगातार हर रोज अर्मतवेल याद करने से संभव हो सकता है। वह सदा हर समय हर कार्य में मेरे साथ हैं, साथी है साथ रहता है। इस आंतरिक शांति का अनुभव करके बाह्य शांति को भी प्राप्त कर सकते हैं। ये केवल निरंतर अभ्यास से संभव हो पायेगी। ऑम शांति।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 28.01.90) 29/5'3" B.Com, M.Com, MBA (Finance). Employed as Deputy Director in Govt. Department. Pay Scale (118700-208400) GP-88. Preferred match from Panchkula, Chandigarh only. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 9034495128, 8398836161*
- *SM4 Jat Girl (DOB Dec. 1988) 31/5'3" M.A (Economics), PhD (Eco.), NET cleared. Serving in Chandigarh as Assistant Professor. Father class-II officer retired from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.06.90) 29/5'3" B. Tech. from Kurukshetra University, MBA Narsee Munjee University Bombay. Serving in MNC at Banglore with package of Rs. 10 lakh PA. Father retired as Accountant from Distt. Education Jind. Mother MA, Govt. school teacher. Brother Hotel management degree, job at Delhi. Avoid Gotras: Malik, Narwal, Khasa, direct Deswal. Cont.: 9812938934*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.09. 93) 26/5'3" MA Economics, Diploma Computer Hartron. Now doing B.Ed. Avoid Gotras: Malik, Kajla, Kundu. Cont.: 8383069126*
- *SM4 Jat Girl (DOB 26.10.92) 26/5'1" B.Tech Information Technology from Kurukshetra University. M.Tech. from MDU Rohtak. HTET cleared. Working as PGT Computer Science. Father in Pharmacist. Younger sister is doing MBBS and younger brother is doing B.Sc (Hons) in Food Technology. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Malik. Cont.: 9466794088*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02. 92) 27/5'4" M.Sc Physics from P.U. Chandigarh, B.Ed, CTET cleared. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar, Sindhu. Cont.: 9463330394*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09. 92) 26/5'2" B.Sc (Math) M.Sc (Math with computer science). B.Ed, HTET, CTET, RTET, NET qualified. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08. 96) 23/5'2" B.Sc Hons. (Zoology) Pursuing M.Sc. Hons (Zoology) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.11.92) 26/5'2" B.Sc, M.Sc. (Physics) from P.U. Chandigarh. B.Ed.Father government employee in Education Department Haryana. Mother government employee in college cadre. Avoid Gotras: Rathi, Ahlawat, Jakhar. Contact: 9466905848*
- *SM4 Jat Girl (DOB 27.01.94) 25/5'2" M.Sc,(Physics) from P. U. Chandigarh. B.Ed. Doing PHD from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Kadian, Phalswal, Dahiya. Cont.: 9888955626*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.09.93) 25/5'4" B.Com, M.Com, BEd. Employed as accounts Clerk in electricity department in Head office Panchkula. Avoid Gotras: Dabas, Punia, Barak. Cont.: 9466240260, 8360294427*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct.93) 25/5' B. Tech Electronics & Communications from GJU, Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Sheokand. Cont.: 9613166296, 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (DOB Jan. 95) 24/5'1" B. Com from Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Sheokand. Cont.: 9613166296,*
- *SM4 Jat Girl (DOB 05.04.90) 29/5'2" M.A., BEd, JBT. Employed as Govt. Teacher (JBT) in U.T. Cadre. Avoid Gotras: Malik, Punia, Mudad. Cont.: 8930243505*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 20.02.85) 34/5'4" B.Sc, B.Ed, M.Sc (Math). Tricity match preferred. Avoid Gotras: Gill, Rathi, Goyat. Cont.: 6239563927*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 1985) 34/5'4" MA, (English) B.Ed, Working as Govt. PGT regular Teacher at Ambala. Avoid Gotras: Nehra, Khatri (Direct Rathi) Cont.: 8816977305, 9416986302*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1989) 30/5'2" B. Tech (Bio-Medical) from PTU. M.Tech (Instrumentation) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451*
- *SM4 Jat Girl (DOB 26.07.95) 24/5'2" GNM, BSc Nursing from MMU Mulana, Ambala. Avoid Gotras: Chhikara, Saroha, Malik, Dahiya. Cont.: 9560857397, 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.10.92) 26/5'5" BSc, MSc Physics from P.U. Chandigarh. BEd. HTET, CTET cleared. Employed TGT*

Science in Janendra Public School Panchkula. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Gehlayan, Khatkar, Chhikara, Boora. Cont.: 7009312721, 9467630182

- *SM4 Jat Girl (DOB 14.10.93) 25/5'4" MSc Math. Avoid Gotras: Joon, Bakhal, Sangwan, Gahlayan. Cont.: 9467311110*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 89) 30/5'4" MCA from P. U. Chandigarh. Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 9988359360*
- *SM4 Jat Girl 25/5'4" B.Sc, BEd., MSc Math. Employed as Math teacher in coaching centre. Parents Government employees. Avoid Gotras: Kaliraman, Panwar, Jani. Cont.: 9416083928*
- *SM4 Jat Girl (DOB August 90) 28/5'3" B.Tech) CSC) MBA. Employed in reputed Consultant (MNC) Earnst & Young Company. Father retired, Mother self employed. Avoid Gehlan, Kashyap, Dagar. Cont.: 9417055709, 9464989509*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.04.91) 28/5'3" BPT, MPT CMT. Employed as consultant Physiotherapy in private Hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont.: 9467680428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.05.90) 29/5'5" M.Sc Bio Informatics, BSc Biotechnology. Working in Research Company with package 3.7 lakh PA. Father ex-IAF. Now working in Haryana govt. Brother, Bhabi working in UK. Avoid Gotras: Katira, Khatkar, Boora. Cont.: 9988643695, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.87) 32/5'2" BSc. MSc. Hons. in Physics, PhD in Physics. Working as Assistant Professor in Physics on regular basis in Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Kaliraman, Dahiya. Cont.: 9988336791*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 12.05.88) 30.10/5'2" BSc. (MLT), MSc (Microbiology) from Punjab Technical University Jallandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.89) 30/5'4" M.Sc Chemistry, Doing job in School. Avoid Gotras: Hooda, Lamba, Pawria. Cont.: 9416849287*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08.91) 28/5'3" Diploma, B.Tech in Electrical Communications from Rohtak. Avoid Gotras: Pawria, Ahlawat, Nandal. Cont.: 9811658557*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University, GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM, Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl 27/5'5" M.Com, MBA, Working in government bank as officer in Panipat, Family settled in Bhiwani. Avoid Gotras: Gawaria, Sangwan, Sunda. Cont.: 9646519210*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct. 86) 32/5'5" MSc (Geography), M.Phil, PhD (pursuing from Punjab University since March, 2015) NET, JRF qualified. Father retired Haryana government officer. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan. Cont.: 9646404899*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 29/5'3" Employed as staff nurse in Government hospital. Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.10.90) 28/6'1" B.Tech (Mechanical) Employed as Assistant Auditor Officer (AAO) Banglore. Required Govt. service girl only. Avoid Gotras: Dhankhar, Sangwan, Suhag. Cont.: 8219949508*
- *SM4 Jat Boy (DOB 05.12.91) 27/ BA English (Hons.) from Delhi University, LLB from Delhi University. Pursuing practice in Punjab & Haryana High Court. Father Additional Director Agriculture, Haryana. Mother Associate Professor English in Govt. College, Saha, Ambala. 15 acre land. 3 Flats in Gurugram, Panchkula and Sonipat. Younger brother studying in Delhi University. Avoid Gotras: Gehlawat, Hooda, Banger. Contact: 9466111156*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1990) 29/5'6" B.Tech. Working as J.E. in Metro Railway Delhi. Required Govt. job girl. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.08.90) 29/5'8" B.Tech. in Mechanical Engineer from Dehradun, Two time Gate qualified. One time IES pre qualified. Employed in Ministry of MSME (MSME technology centre, Rohtak) as Senior Engineer. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Redhu, Nara, Lathar. Cont.: 9815188255*
- *SM4 Jat Boy 29/6'2" B.Tech. Employed as Inspector CBI. Preferred highly qualified working girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.06.92) 27/5'11" B.Tech. Extra qualification Army Shooting Champion Swimmer. Employed as Captain Army EME. Father Veternary Surgeon at Karnal. Mother TGT at Karnal. Avoid Gotras: Jaglan, Savant, Goyat. Cont.: 9416285090*
- *SM4 Jat Boy (DOB 08.10.90) 28/5'11" B.C.A, Working as Office Assistant in Haryana Gramin Bank. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Chhikara. Cont.: 9417091551*
- *SM4 Jat Boy 28/6'2" IRS, Employed in Chandigarh Zone. Preferred Professor or from Civil Service. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Chhikara. Cont.: 9812183264*
- *SM4 Manglik Jat Boy (DOB 24.09.90) 28/5'7" B.Tech in Mechanical Engineering from Mulana University, Ambala. Employed as Upper Division Clerk in Chandigarh Administration. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Kadian, Dalal. Cont.: 7973036732*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.06.90) 29/5'7" B. Com, M.A. 2nd Year. Employed in Government job in U. T. Secretariat Chandigarh. Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Bura. Cont.: 9050016311*
- *SM4 Jat Boy (DOB 13.01.91) 28/5'9" MBA. Employed as P. O. in Bank of in Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758*
- *SM4 (Dr.) Jat Boy (DOB 02.09.85) 33/5'8" BDS Bangalore, Father Retired Principal, Mother MA, BEd. Two sisters BDS/ MBBS, Brother one BDS. Six acre agriculture land. Own Plots, flats and clinic. Required BDS, BAMS, BHMS, Nurse. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Mor. Cont.: 9868092590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" B.Sc in H.M. Employed in railways. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont.: 9815304886*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.11.93) 26/5'8" MSc Physics. Employed as Central Excise Inspector. Preference government employee with height 5'4". Avoid Gotras: Chahal, Dangi, Bagri. Cont.: 9416561365*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.08.93) 26/5'8" B.V. Sc. Employed in Government job on contract basis at Rohtak. Avoid Gotras: Gehlan, Khatkar, Malik, Boora. Cont.: 9467630182*
- *SM4 Jat Boy (DOB February, 89) 29/5'11" MBBS. M.O. in Haryana. Father retired from Haryana government. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Sangwan, Datarwal, Legha. Cont.: 8058980773*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.09.86) 32/5'11" Employed as Major in Army. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat, Sangwan, Dhaka. Cont.: 9050422041*
- *SM4 Jat Boy (DOB 3.10.90) 28/6' B.Tech, Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India) Avoid Gotras: Dhankhar, Suhag, Sangwan. Cont.: 8219949508*
- *SM4 Jat Boy (DOB 26.05.92) 26/5'8" B.Tech Mechanical, Own factory at Panchkula (PCB Manufacturing) Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई बोझ की चीज नहीं है। वह आनंद से ओत–प्रोत है। – विनोबा भावे

हमें जिन पर गर्व है

यशस्विनी सिंह वह शूटर है जिन्होंने ऊंचे पद पर विराजमान माता–पिता की छाया में खुद का अलग मुकाम हासिल किया। यशस्विनी के पिता एस.एस. देसवाल आईटीबीपी के महानिदेशक और मां सरोज इनकम टैक्स कमिशनर है। देसवाल को 2010 दिल्ली कॉमनवेल्थ में कादपुर बिग बोर शूटिंग रेंज में पदक समारोह के मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाया था। उस दौरान 13 साल की यशस्विनी भी साथ थीं। पूर्व आईजी और आईपीएस अधिकारी टी.एस. ढ़िल्लों कोच और रेंज इंचार्ज थे। यशस्विनी ने ढ़िल्लों से शूटिंग करने की इच्छा जताई। ढ़िल्लों कहते हैं कि पिता ने समझा बेटी सब भूल जाएगी, पर ऐसा नहीं हुआ। एक दिन पिता का फोन आया और कहा कि बेटी शूटिंग के लिए जिद कर रही है। उन्होंने यशस्विनी को पुरानी पिस्टल दी। पहले वह उसे बिना पिस्टल के ड्राई प्रैक्टिस कराते रहे। उसके बाद उन्होंने पंचकूला स्थित आवास में 10 मीटर की रेंज बनवा दी। तीन साल में यशस्विनी ने 2014 में यूथ ओलंपिक खेल लिया, जहां वह छटे स्थान पर रहीं। 2017 में वह जूनियर वर्ल्ड चैंपियन बनीं।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यशस्विनी की इन उपलब्धियों के लिए बधाई देती है और इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

POSTER MAKING COMPETITION ON 25-11-2019

FOR SCHOOL GOING STUDENTS

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH/PANCHKULA for school going students on 25 November, 2019 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	Class III to V
Category B	Class VI to VIII
Category C	Class IX to XII

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs.1100/- and remaning participated schools will be given consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "**INTOXICATION THREAT TO A GIFT TO THE NATION**" (नशावृत्ति राष्ट्र को खतरा) **or** "**CLEANLINESS IS ENVIRONMENT**" (स्वच्छ वातावरण जीवन दान है) चित्र में दर्शायें | Duration of the Competition will of one hour.

Entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2019 up to 5 P.M.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on **Basant Panchami**.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-2654932, 2641127, Email: jat_sabha@yahoo.com or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। यात्री निवास की साईट की निशानदेही लेकर चार दीवारी बनाने का कार्य चल रहा है। बिल्डिग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्डिंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्रि निवास भवन का निर्माण अक्तूबर 2019 में शुरू किया जा रहा है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रेंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह-सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-2654932, 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर-6, पंचकूला
फोन : 0172-2590870, Email: jatbhawanpkl6@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।